PREM RATNA

BY

BIBI RATNA KUNVARI.

प्रेम-रत्न

बीबी रत्नकुँवरि-कृत

चौथी बार

लखनऊ

केसरीदास सेठ द्वारा

ोर-प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित

सन् १९२५ ई०

भूमिका



बहुतेरे मनुष्य ऐसा कहते हैं, कि अब इस काल में स्त्रियों का पढ़ना लिखना भारतवर्ष से लोपही होगया है और बहुतेरे ऐसा भी कहते हैं कि यह स्त्रीजाति पढ़ने-लिखने के योग्य ही नहीं। इनके पढ़ाने लिखाने में चाहे जितना परिश्रम करो, इन्हें कदापि कुछ न आवेगा। कितने ही ऐसा सोचते हैं कि स्त्री जो पढ़ना लिखना सीखेंगी तो अवश्य बिगड़ जायँगी और कुमार्गगामिनी हो जायँगी। कितने ही अगले समय की स्त्रियों का वृत्तान्त मनसे भुलाकर ऐसा समझते हैं कि नारी का चित्तही विद्या उपार्जन में न लगेगा। इन्हें विधाता ने केवल घर गृहस्थी का काम करने को ही रचा है। इस कारण, हमने अपनी दादी बीबी रत्नकुँवारि का बनाया हुआ यह प्रेमरत्न ग्रन्थ छपवाने का उद्योग किया है। वह संस्कृत में बड़ी पण्डिता थीं। छहों शास्त्र की वेत्ता, फ़ारसी भाषा भी इतनी जानती थीं कि मौलाना रूम की मसनवी और दीवान शम्सतब्रेज़ जब कभी हमारे पिता पढ़कर सुनाते तो

वह उसका सम्पूर्ण आशय समझ लेती थीं। गाने-बजाने में अत्यन्त निपुण थीं। चिकित्सा यूनानी और हिन्दुस्तानी दोनों प्रकार की जानती थीं। योगाभ्यास में परिपक्व और यम नियम और वृत्ति ऋषि मुनियों की सी थी। सत्तर बरस की अवस्था में भी बाल काले और आंखों की ज्योति बालकों की सी थी। वह हमारी दादी थीं, इससे हमको अब उनकी अधिक प्रशंसा लिखने में लाज आती है; परन्तु जो साधु संत और पण्डित लोग उस समय के उनके जाननेवाले काशी में वर्त्तमान हैं वह उनके गुणों को अद्यावधि स्मरण करते हैं।

शिवप्रसाद



प्रेमरत्न।

सो०अविगत आनँद-कन्द, परम पुरुष परमातमा ॥
सुमिरि सु परमानन्द, गावत कछु हरियश विमल १
पुनि गुरुपद शिर नाय, उर धरि तिनके वचन वर ॥
कृपा तिनहिं की पाय, प्रेमरत्न भाषत रतन २
अगम उदधि माधि जाहि, पंगु तरहिं बिनु जिमि तरणि ॥
तैसिय रुचि मन याहि, अमित कान्हयश गान की ३
पै मो मन विश्वास, पुरवत पूरण काम प्रभु ॥
उरपुर सकल निवास, निज जन को अभिलाष लखि ४
लीला अगम अपार, पार न पावें शेश शिव ॥
जासु श्वास श्रुति चार, तिहि गुण गण को गनि सकहि ५

अमित चरित्र विचित्र, यथाशक्ति गावत सकल ॥
निज मुख करन पवित्र, भाषत हरिगुणगण विमल ६
भक्त हृदय सुख दैन, प्रेम पूरि पावन परम ॥
लहत श्रवण सुनि चैन, भववारिधि तारण तरण ७
इहां कहौं विस्तार, मिलन सकल कुरुक्षेत्र को ॥
कथा जु प्रथम उदार, करि बरणौं संक्षेप तिहि ८

दो० भई भूमि जब दुखित अति, असुरन के अघभार ॥
ब्रह्मादिक सुर संग लै, चली धेनुतनु धार १
क्षीरसिंधु के तीर मिलि, कीन्हीं जाय पुकार ॥
अस्तुति करि विस्तार सब, निज निज मति अनुसार २
जै जगवन्द मुकुन्द हरि, जै जै सच्चिद रूप ॥
जै जै पूरणब्रह्म पर, नित्यानन्द स्वरूप ३
जै जै प्रणतारत हरण, पुरुषोत्तम जगदीश ॥
गुणागाध निर्बाध अज, सकल विश्व मन शीश ४
कारण करण अनन्त गुण, करिय सकल उद्धार ॥
हरिय नाथ धरणी गरुव, धरिय मनुज अवतार ५
कमलाकर चापत चरण, शेश सेज में शैन ॥
बोले करुणाऐन प्रभु, सुनि सुर गद्गद बैन ६
दुखित देखि जनदुख सदा, करुणासिंधु खरारि ॥
अवनी हित अघहरण हरि, कह्यो लेन अवतार ७
गगन गिरा सुनि हरषि सुर, आये निज निज धाम ॥

पुनि गर्भाकर्षण भये, सङ्कर्षण बलराम ८
अब हरिजन्म कहौं शुभगाई । सुनत सकल जिहि पाप नशाई ॥
भादौं तिथि अष्टमि बुधवारी । रजनि कृष्ण अवतरे मुरारी १
माता पितहि कृतारथ कीन्हो । चारि भुजा धरि दर्शन दीन्हो ॥
पुनि प्रभु तिनकहँ बहु समुझाये । गोकुल गोप नन्द गृह आये २
महरि भवन भये आनँद भारी । मुदितसकलव्रज के नरनारी ॥
तहँ बसि बालकेलि रस कीन्हा । तात मात व्रजजन सुख दीन्हा ३
पुनि मधुवन गवनत नँदलाला । गोपी ग्वाल भये बेहाला ॥
बहुरि मिलन तिनसों प्रभु भाख्यो । अवधिलागितिनप्राणहिंराख्यो ४
मथुरा जाय असुर संहारे । कंस मारि भुव भार उतारे ॥
उग्रसेन शिर छत्र धराये । जनकजननि के निगड़ छुड़ाये ५
बहुरि द्वारका जाय बसाई । छप्पन कोटि लै यदु समुदाई ॥
ऋधि सिधि तहँ नव निधि विधि छाई । कञ्चनपुरी पुराणन गाई ६
ब्रह्मलोक जिहि लखत लजावै । सो सम्पति कापै कहि आवै ॥
तहँ हरि भये द्वारकानाथा । द्वारावति को करी सनाथा ७
इक शत अष्ट प्रिया पट भाखी । सोरह सहस महल अरु राखी ॥
सो सकलन में सरस पियारी । श्रीरुक्मिणि की बात हि न्यारी ८
तिनते हरि अन्तर नहिं राखैं । क्षण क्षण की निज मन की भाखैं ॥
इक दिन चली प्रेमकी गाथा । हा व्रज कहि शोच्यो यदुनाथा ९
तब रुक्मिणि प्रभु सन कर जोरी । बोली वचन मधुर रस बोरी ॥
पुरी द्वारका सम नहिं कोऊ । अमरावती न पटतर सोऊ १०

पितु वसुदेव देवकी माता । ऋद्धिसिद्धिनवनिधिविख्याता॥
षट दश सहस आठ पटरानी । सोसम्पतिप्रभुमनहिं न मानी ११
पुनि पुनि सुमिरत गोकुल ग्रामा । उरते नहिं बिसरत सो ठामा॥
तिनकी प्रीति कहौ समुझाई । जिनमें तुम मन रहत सदाई १२
सुनि रुक्मिणि के वचन सुहाये । प्रेम पुलकि लोचन जल छाये॥
तब बोले यों राजिवनयना । तुम जु कहत सो सांचे बयना १३
पितु वसुदेव देवकी माई । तेऊ करत छोह अधिकाई ॥
पै नहिं म्वहिं बिसरत व्रजबाता । नंदबबा अरु यशुदा माता १४
तिनकी प्रीति वरणि नहिं जाई । जिहिविधि मैं उनते सुखपाई॥
क्षणक्षणमुख लखि लेत बलैया । को सप्रेम अब कहै कन्हैया १५
कहँ सद माखन मैया करिकै । मथि राखत मेरे हित धरिकै॥
व्रजसुखनाहिंबिसरतबिसराये।जिहिलखिसुरमुनिमनललचाये १६

दो० वह वृन्दावन सुख सघन, कुञ्ज कदम की छाहिं ॥
कनकमयी यह द्वारका, ताकी रज सम नाहिं १
नृपति सभा सिंहासनरु, जिहि लखि लजत अनङ्ग ॥
नहिं बिसरत वह सखन को, गोचारन वन सङ्ग २
राज साज साजे सकल, तिमि नहिं नेकु सुहाहिं ॥
गुञ्जमाल वन चित्र जिमि, मोर मुकुट मन माहिं ३
रानी सोरह सहस तुम, करत रहत अति प्रीति ॥
श्री राधाछवि मोह की, कछु ही न्यारी रीति ४
गोपी सोरह सहस सब, लोक लाज पति त्यागि ॥

अर्धनिशाहि रस रास करि, ममहित ते चित पागि ५
बिछुरत तिनते सकुचि मन, कह्यौं मिलहुँ पुनि आय ॥
उनते उऋण भयों नहीं, रह्यौं द्वारका छाय ६
बहुरि जाय ब्रज भेंटिये, नटवर वेष बनाय ॥
ब्रजवासिन सुख दीजिये, मुरली मधुर बजाय ७
निशिदिन मेरो ही रहत, ब्रजवासिन में ध्यान ॥
करत बनत अब बात मुहिं, उनहीं के मनमान ८

भक्ताधीन विरद प्रभु केरे। गावत वाणी वेद घनेरे ॥
संतत रहत भक्त के पासा। पुरवत हैं प्रभु तिनकी आसा १
जे सप्रेम हरिसों मन लावैं। तिनको कबहूं नहिं बिसरावैं ॥
ग्राह ग्रसित गज जाय छुड़ाये। गरुड़ छांड़ि तहँ आतुर धाये २
पुनि प्रभु पांडव जरत बचायो। द्रुपदसुता को वसन बढ़ायो ॥
अजामील यम ते रखिलीन्हों। भजन प्रताप ध्रुवहि बर दीन्हों ३
जन प्रह्लाद अभय करि थाप्यो। ताती वायु न बारहि व्याप्यो ॥
जो जन मनते ध्यावहिं जैसे। ताकहँ प्रकट होत प्रभु तैसे ४
अग जग सकल विश्व के स्वामी। सर्वमयी सब अन्तरयामी ॥
प्रेम युक्त ब्रजजन मन ध्यायो। ताते प्रेम हृदय हरिछायो ५
प्रभु के मन यह रहत सदाहीं। ब्रजवासिन ते भेंट्यों नाहीं ॥
इक दिन दिनकर ग्रहण भयोजब। बहु नर नारी जात चले तब ६
जानि परम कुरुक्षेत्रहि पावन। सकल चले तहँ ग्रहण नहावन॥
यह सुनि यदुनन्दन मन मानी। एक पन्थ द्वै कारज ठानी ७

कह्यो यदुवपति यदुकुलकेतू । हम सबहू चलिये कुरुखेतू ॥
अरु जेते परिजन पुरवासी । तिनहुँ कहहु यह बात प्रकासी ८
ग्रहण नहाहु सकल तहँ जाई । सुनि आयसु सब शीश चढ़ाई ॥
मुदित सकल आनँद रस पागे । गवन साज साजन कहँ लागे ६
अधिकारिन सब साज सँवारे । नाना वाहन सुभग सिंगारे ॥
अरु महलनके साज नवीने । तापर बर बसननि कसिदीने १०
सुनत परस्पर सब नर नारी । घर घर निज निज सौंज सँवारी॥
द्वारावति के जिते निवासू । चलेजात सब परम हुलासू ११
बढ़्यो कटक अतिपरम विशाला । चले संग अगणित भूपाला ॥
निज निज फेंटन लीन्हीं कसकर। चलेसकलहरियश कर लशकर १२
कारे करिवर गरजन लागे । सावन घन जनु लखि अनुरागे ॥
अगणित तुरँग चले हिहिनावत । खच्चर बसह ऊंट अररावत १३
चौपालन सुखपाल पालकी । डोली अरु चंडोल नालकी ॥
अमित भीर मग परत न पायो । धूरि धुन्ध नभ-मंडल छायो १४
मग में होत कोलाहल भारी । मुदित करत कौतुक नरनारी ॥
यों पहुँचे कुरुखेतहि जाई । परि गयो कटक तहाँ क्षितिछाई १५
हाट बजार दुकान सुहाई । तहँ सब वस्तु मिलत मनभाई ।
देश देश के यात्री आये । भये तहां मिलि अनँद बधाये १६
दो० बरन बरन बर तंबुवन, दीन्हों तान वितान ॥
अति फूले भूले फिरत, डेरा परत न जान १
जबते मथुरा तन चितै, तजि व्रजजन यदुनाथ ॥

बिरहबिथा ब्रज में बढ़ी, तहँ सब भये अनाथ २
सुइ तीरथ कुरुखेत सब, आये ग्रहण नहान ॥
यशुमति राधा गोपिगण, नन्दादिक वृषभान ३
गोप एक नटभेष सजि, आयो बीच बजार ॥
तहँ खरभर लशकर पस्यो, सो अति रह्यो निहार ४
गुञ्जाभूषण पखशिखी, खोंसे लटपट पाग ॥
जँघ जँघिया चित्रित सुतन, लखि सब कौतुक लाग ५
इक यादव हँसिके कह्यो, कहां तुम्हारो वास ॥
अति सुन्दर तन छबि बनी, नाम कहहु परकास ६
तब उनहूँ कहि तुम कहहु, काके सँग कित ठाउँ ॥
द्वारावतिपति कटक यह, कह्यो यदुव निज नाउँ ७
सुनत द्वारका नाम तिहि, लियो बिरह उर छाय ॥
हा नँदनंदन कान्ह कहि, गयो ग्वाल मुरझाय ८
इक गोपाल संग मम जाई । बस्यो नृपति है सोइ पुरछाई ॥
हम कहँ छांड़ि भयो सो न्यारे । ताही बिनु सब भये दुखारे १
तुम लशकरिये भूप उदारा । कत पूछत हम जात गँवारा ॥
सुनि यादव कछु मन बिहँसाना । तुम ब्रजवासी हौ हम जाना २
जिनको तुम भाषत गोपाला । उनहीं को यह कटक रसाला ॥
अब दुख मेटहु भेंटहु तिनते । गयो ग्वाल हरि कटकहि सुनते ३
तिनकहँ आगम सगुन जनायो । कछु अनन्द है है मन आयो ॥
ग्वालहि आवत रहे निहारी । गदगद कंठ न सकत सम्हारी ४

दूरहितें बोल्यो गोपाला। मनमोहन आये नँदलाला॥
जिन बिन सब व्रज भये दुखारे। ते आये इहँ प्राणपियारे ५
सुनि गोपिन नहिं परत पत्यारो। कहँ ऐसो है पुण्य हमारो॥
सुनत नन्द नैनन जल छाये। ऐसे भाग कहाँ हम पाये ६
खोज लेहु सब पूछहु सारे। कहँ उतरे प्राणन के प्यारे॥
सुनतहि यशुमति ह्वैगइ बौरी। ता ग्वालहि पूछत उठि दौरी ७
आये श्याम सत्य कहु भैया। मोहिं दिखावहु नेकु कन्हैया॥
निजलालन को कण्ठ लगाऊं। दुसह विरह को ताप नशाऊं ८
कत अब गहरु करत बेकाजहि। भेंटहु बेगि सकल व्रजराजहि॥
तब ऐसे भाष्यो नँदराई। अब हरि होहिं न व्रजकी नाई ९
मणिन खचित बैठत सिंहासन। चवँर छत्र करगहे खवासन॥
अतिहि भीर नृप बार न पावैं। द्वारहिते बहु फिरिफिरि जावैं १०
छत्रपतिहि छरियन बिलगावत। तहँ हम सबकी कौन चलावत॥
छपन कोटि यदु छांड़ि सगाते। क्यों मानै धायन के नाते ११
कोउ कह ऐसे कैसे जैहैं। हमकहँ लखि हरि मनहिं लजैहैं॥
कोउ कह मणि आभूषण पहिरे। अम्बर वर विचित्ररँग गहिरे १२
कोउ कह हम तो ऐसेहि जाहीं। अबतो कछु बनिआवत नाहीं॥
हरि को देखि परम सुख पैहैं। ता अनुचर कर मारहु खैहैं १३
कोउ कह हम नीके भुजभरिहैं। भये भूप तौ काधौं करिहैं॥
करत मनोरथ कोउ मनमाहीं। कोऊ खोज लेन उठिजाहीं १४
कहत परस्पर मुदित गुवाला। अबतो फिरि आये गोपाला॥

इक कहि अब गोकुल लैजैहैं । हमते बहुरि जान कहँ पैहैं १५
कोउ नाचत है दै करतारी । बहु विधि करत कुलाहल भारी॥
इक एकनते देत बधाई । मानहुँ सबन गई निधि पाई १६
दो० भये मगन सब प्रेमरस, भूलि गये निज देह ॥
लघु दीरघ वै नारि नर, सुमिरत श्याम सनेह १
कहति परस्पर युवति मिलि, लै लै कर अँकवार ॥
प्रीतम आये री सखी, तन साजहु शृङ्गार २
इक आई आनँद उमँगि, प्यारिहिं देत बधाय ॥
प्राणनाथ सुखदैन इहँ, मोहन उतरे आय ३
तहँ राधा की कछु दशा, बर्णत आवै नाहिं ॥
मलिन वेष भूषण रहित, विवश रहित तन माहिं ४
कबहुँ झुरावत विरहवश, पीत बरण है जाय ॥
कबहूँ व्यापत अरुणता, प्रेम मगन मुदछाय ५
कान्ह कान्ह कबहूँ कहत, कबहुँ रटत निज नाम ॥
मौन साधि रहिजात जब, श्रमित होत अति बाम ६
चख चितवत जितहित हरी, श्रवण मुरलिधुनि लीन ॥
श्याम वास बसि नाकमणि, रूप पयोनिधि मीन ७
तन मन धन गृहजनन की, नेकहुँ सुधि तिहि नाहिं ॥
चितवत काहू नहिं दृगन, लगन लगी उर माहिं ८
मनभावन आवन सुनि जागी । भई चेत चित चितवनलागी ॥
कहि कित ठाढे री गोपाला । तू जु कहत आये नँदलाला १

तब ऐसे बोली ब्रजबाला । अब नहिं वे हैं री गोपाला ॥
कहँ मुरली मुख बजत रसाला । बरही मुकुट कहां वनमाला २
तन वनधातु न चित्रितकारी । कहँ वह कांधे कामरि कारी ॥
लागत लाज लखत अब ग्वाला। भये द्वारका जाय भुवाला ३
सोरह सहस बरी नृपबारी । कत पूछहिं अब ग्वारि गँवारी ॥
कहवावत यादवकुलनन्दन । छोरत हैं भूपति के बन्दन ४
नृप किरीट माथेपर छाजै । उर मणिगण गुण हार विराजै ॥
यह सुनिकै राधा मुसुकाई । पांय पलोटन की सुधि आई ५
गुञ्जमाल हित फिरत कन्हाई । मांगत सौ सौ हाहा खाई ॥
केतिक राजतिलक किन होहू । पै नहिं हरि बिसरहिं ब्रज छोहू ६
कोटिक वरहिं न राजकुमारी । मेरी उनकी बातहि न्यारी ॥
बारिचरहिं बारी मन भावत । पय परसत सो मन अकुलावत ७
नानावस्तु धरहु बरु लाई । चुम्बक चिमटत लोहहि जाई ॥
वै नहिं मानहिं रंक उदारा । श्यामहिं केवल प्रेम पियारा ८
हरिगुण सुमिरि मगन मन प्यारी। तैसहि मुदित सकल ब्रजनारी ॥
कोऊ कहत जु अबहीं पाऊँ । मनमोहन को कण्ठ लगाऊँ ९
बहुरि द्वारका जान न पावैं । सब मिलिकै ब्रजही लैजावैं ॥
इक सवितहि बिनवत मनमाहीं । अबधौं हरिबोलहिं की नाहीं १०
इक कह जो मोतन मुसुकावैं । तौ निजजन्म सफल करिपावैं ॥
अपर कहत इक उरहन देहौं । दांव कूबरी को अब लेहौं ११
एक कहत आवन तौ देऊ । को जानै राजन के भेऊ ॥

ऐसे सब हरि में मन दीन्हें । निज निज उक्ति मनोरथ कीन्हें १२
अति अनन्द नहिं जात बखानी । मनहुँ शिखी सुनि वारिद बानी ॥
व्रजवासी जनके यों हाला । गाय बच्छ सब गोपी ग्वाला १३
जिन गैयन गोपाल चराईं । तिनकी दशा बरणि नहिं जाईं ॥
श्याम विरह सों रहीं झुराईं । चरत नहीं तृण उदर अघाईं १४
हस्तकमल की सब प्रतिपाली । तिनके मन छाये वनमाली ॥
सुनि हरि नाम सकल अनुरागीं । श्रवण उठाय प्रेम रसपागीं १५
पशु के प्रेम जहां अस गावैं । नरनारिन के कौन चलावैं ॥
ऐसे सब व्रजजन मन फूले । हरि आगम सुनि सब सुधि भूले १६

दो० सो यादव आतुर कही, द्वारपाल कहँ जाय ॥
व्रजजन सब आये यहाँ, हरि को देहु जनाय १
द्वारपाल सुनि तुरत यह, भेजी खबर पठाय ॥
नन्दादिक नर नारि सब, व्रज के उतरे आय २
व्रजवासिन के नाम सुनि, विवश भये घनश्याम ॥
प्रेम अंबु अंबुधि उमँगि, लोचन ललित ललाम ३
पुलकित तन कंपित वदन, वचन न सकत सँभार ॥
सुपन किधौं है सत्य यह, परत नहीं पतियार ४
रहे चकित तित ध्यान धरि, उर शाल्यो सो ठाम ॥
त्रिभुवन सुख पावत नहीं, नन्दधाम विश्राम ५
अब वह कब शिशुछवि धरहुँ, जो पाऊं व्रजवास ॥
कौन भांति व्रजजनन के, पूजिय मनकी आस ६

भये जलज लोचन अरुण, मोचन जल अतिधार ॥
बिसरि गई सब सुधि हरिहि, तनहू की न सँभार ७
श्री वसुदेवरु देवकी, यह सुनि आये धाय ॥
देखिरहे हरि की दशा, धनि धानि कह्यो सुनाय ८
अँसुवन पोंछति अंचर माता । थँभत नहीं दोउदृग जलजाता ॥
भिजैं वसन उर श्वास नमावैं । नर चरित्र सब प्रकट दिखावैं १
भव जलानिधि के सोखनहारे । नयननीर नहिं सकत सम्हारे ॥
गहि गहि कर जननी समुझावै । हरष समय कतही दुख पावै २
कहत देवकी अब मैं जानी । मनकी बात आजु प्रकटानी ॥
जब तबहीं तू रहत उदासा । कछु गुनिगुनि मनलेत उसासा ३
सो तव बात जानि नहिं गयऊ । आज मनोरथ पूरण भयऊ ॥
ऐसे मुदित देवकी माई । बड़े भाग आये सुखदाई ४
बहुत जननकहँ देइ बधाई । कहत धन्य दिन आजु सुहाई ॥
प्रथम आय जिन खबर जनाई । मनभावती वस्तु तिन पाई ५
अतिअनन्द वसुदेव मुदित मन । कहत धन्य यह दिवस घड़ीछिन ॥
सुनहु लाल प्यारे घनश्यामा । भये तुम्हारे पूरणकामा ६
नंदबबा अरु यशुदामाई । आय मिले यह अति मनभाई ॥
या सम हरष न दूजो तुमको । चाहिय कछुक बधाई हमको ७
पितुके वचन सुनत सुखदानी । बोले करुणानिधि मृदुबानी ॥
जैसो हरष भयो यह हमको । कहा बधाई दीजिय तुमको ८
त्रिभुवन वैकुण्ठादिक माहीं । याके योग्य बधाई नाहीं ॥

व्रजवासी अति मोको प्यारे । उनके ऊपर तन मन वारे ९
सो यह वस्तु तुम्हारिहि ताता । जानत सब जगमें विख्याता ॥
कहा बधाई तुमको दीजै । यह अपराध क्षमा प्रभु कीजै १०
सुनि सुतवचन परम सुख पायो । धन्य धन्य कहि प्रभुहि सुनायो ॥
बड़े भाग ऐसे सुत पाये । पूरब पुण्य उदय ह्वै आये ११
पुनि पुनि निजहि कहत बड़भागी । ब्रह्म धरेउ नर तन जिहि लागी ॥
धन्य यशोदा धनि नँदराई । शिशुपन सुत करि गोद खिलाई १२
अबलौं गुण गावत हौं सोई । तुमसम जग सुशील नहिं कोई ॥
पूरण नेह निबाहनहारे । भक्तन ते कबहूं नहिं न्यारे १३
बहुविधि करि वसुदेव बड़ाई । प्रेम मगन उर हरष न माई ॥
ऐसे अति मन मोद बढ़ाये । सानँद पुनि निज ठाम सिधाये १४
तब इक सखि रनिवासहि जाई । रानिन प्रति सब बात जनाई ॥
आजु कहा जानी नहिं जाई । रोवत हैं अतिही यदुराई १५
यह सुनि सब रानी उठिधाईं । रुक्मिणिआदितहां चलि आईं ॥
हरिढिग सन निज वदन दुराई । देवै के ढिग बैठीं आई १६
दो० मधुर वचन रुक्मिणि कहत, श्री देवकिहि सुनाय ॥
आज कहा जानि न परत, रोवत हैं यदुराय १
कहत देवकी आजु भे, पूरण मनके काम ॥
नन्द यशोदा गोपगण, सब आये इहि ठाम २
तिनके आगम सुनत इहि, रह्यो न कछु सम्भार ॥
उमँगि प्रेम आनन्द उर, दृगन चली बहि धार ३

उन याको सुख बहु दियो, शिशुपन लाड़ लड़ाय ॥
तिनके गुण कहिजात नहिं, कीन्हीं बड़ी सहाय ४
लालन को पालन कियो, हितकरि निज सुत जानि॥
द्वादश बरष रह्यो तहां, बालकेलि रस ठानि ५
हुतो तबहिं अति अचगरो, डरत काहु से नाहिं ॥
महर महरि के दृगन दुरि, निकसि सदन से जाहिं ६
रोकत टोकत युवति मग, लुभयो गोपिन माहिं ॥
बन वनितन के सँग फिरत, वे मोहित इन पाहिं ७
अजहूं लौं बिसरत नहीं, रहत उनहिं में प्रान ॥
नन्द यशोमति गोपिजन, सदा हृदय व्रज ध्यान ८

सुनिकै मन बिहँसीं सब रानी । यह तो बात आजु हम जानी ॥
कहत परस्पर सब मुसुकाई । वेई व्रज क्रीड़ा सुधि आई १
श्री रुक्मिणी मौर सब तीकी । जाननहारि पीय के जीकी ॥
अति मन हरष कहत मृदुबानी । धन्य धन्य आपुनको जानी २
व्रजवासी मम भागन आये । सुफल फले सब मनके भाये ॥
धन्य नन्द धनि यशुमति माई । जिनके गुण गावत सुखदाई ३
धन्य धन्य श्री राधाप्यारी । धन्य सकल व्रज गोपकुमारी ॥
जिनके हृदय बसत घनश्यामा । नटवर वेष धरे अठयामा ४
मन वच करि हरि उनके वल्लभ । तिनकेदरश हमहिं अतिदुर्लभ॥
श्रीमुखहूँ यह वचन उचारे । व्रजवासी मोकों अति प्यारे ५
पुनि पुनि मो मन ऐसी आवै । करिय सोई जो श्यामहिं भावै॥

हरिको व्रजजन में लैजैये । सब विधि मनके साध पुजैये ६
सुनिरुक्मिणिकीअमृतबानी । यदुपति अति मनमें सुखमानी ॥
यह सुनिकै आई सतिभामा । कुटिल चातुरी गरब कि धामा ७
बड़े नृपति की सुता कहावै । काहूको चितमें नहिं लावै ॥
मुख चमकाय चढ़ाई त्यौरी । हरि मुख लगी अतिहि लड़बौरी ८
चिबुक लायकर पुनिमुसुकाई । करत ठठोली हरिहि सुनाई ॥
अब काहे मन करत उदासी । मुदित होहु आये व्रजवासी ९
वेई सखा सङ्ग के ग्वाला । अरु वेई आईं व्रजबाला ॥
राधाहू सँग आई है है । तुम्हरो दरश देखि सुखपैहै १०
तुमहुँ धरो नटवर छवि सोई । वेई तुम अरु वेई कोई ॥
यह सब नृपश्रृङ्गार उतारो । वैसहि मोरमुकुट शिर धारो ११
वैसहि काहि न चीतहु गाता । नीके घसि घसि वनके धाता ॥
गुंजा गूंथि पहिरि तन माहीं । मिलहु सखन दै दै गलबाहीं १२
वैसहि माखन जाय चुरावहु । रही साध तब अब सुपुरावहु ॥
तारी दै दै कूदहु गावहु । वन वन तिन सँग धेनु चरावहु १३
कछनी काछि धरि कमरीकांधे । वंशी फूंकि बुलावहु राधे ॥
औरहु सङ्ग लेहु व्रजभामिनि । रचहुरासकिनआज़ुहियामिनि १४
कैसे नाचतहौ तिन साथा । जोरि जोरि गोपिन तें हाथा ॥
सो करि कृपा हमहिं दिखरैये । नैननको फल हमहूँ पैये १५
सुनि हरि सतिभामा के ताने । सजल नैन कछु मुख मुसुकाने ॥
मन मन जानत करत ठठोली । समय पाय इन चितकी खोली १६

दो० बिहँसि चले यदुराय तब, महल बाहिरे आय ॥
कह्यो जनावहु खबर यह, दाऊ जू प्रतिजाय १
व्रजवासी नर नारि अरु, नन्द यशोमति माय ॥
ग्रहण न्हान के हित सकल, उतरे हैं इत आय २
बलकहँ खबर पठाय उत, जहँ व्रजजन समुदाय ॥
पदपंकज पाँवड़ि रहित, आप चले तहँ धाय ३
भूप भीर खरभर खरे, बहु जन उमड़े आय ॥
जकिथकि सब कौतुक निरखि, अतिमन अचरज पाय ४
सुन्यो यशोदा नन्द यह, आवत हैं सुखदाय ॥
मन अनन्द तन सुधि बिसरि, रहे वारि दृगलाय ५
मच्यो शोर व्रजजनन में, आवत नन्दकिशोर ॥
मुदित गोप निजनिज सजत, भूषण ठौर कुठौर ६
इक इक पट खैंचत युगल, कोउ न काहु सँभार ॥
ठाढ़े बांधत पागशिर, झुकिझुकि झांकत द्वार ७
तिहि क्षण देख्यो दूरितें, आवत श्रीनँदनन्द ॥
व्रजजन फूले कुमुद वन, मनहुँ उदित भये चन्द ८

यशुमति रही निहारि चकीलौं। मन अकुलात न भेंटिसकी त्यौं॥
भई भीर गोपन की भारी। अगणित तहां जुरे नर नारी १
धाय धाय आवत हैं ग्वाला। भरि भरि भुज भेंटत गोपाला ॥
सो छवि कछु बरणत नहिं आवै। शत रति पतिकी द्युतिहि लजावै २
अति सुन्दर तन श्याम तमाला। उदरखान छवि भुजा विशाला॥

द्युति मण्डल कुण्डल श्रुति सोहै । रतन जटित देखत मन मोहै ३
कण्ठ कपोल चिबुक छवि न्यारे । शुक नासिका अधर अरुणारे ॥
दृग गति अति खंजनहि लजाये । भ्रूधनु मनहुँ मनोज चढ़ाये ४
शीश किरीट चारु छवि जाला । उर सोहत मुक्तामणि माला ॥
गोपन मध्य लसत सुखकन्दा । उडुगण में जिमि पूरणचन्दा ५
कोउ आगे कोउ भेंटत पीछे । कोऊ अङ्कम लेत तिरीछे ॥
कोऊ आय पांय पर परहीं । तनमनधन निवछावरि करहीं ६
नटवर रूपहि गोप लुभाने । नृपके साज सुमनहिं न माने ॥
लेहिं उतारि मुक्त मणि माला । गुञ्जमाल पहिरावत ग्वाला ७
एक नजर अंबर लैलीन्हे । कांधेपर कांवरि धै दीन्हे ॥
इक लै मोरपंख शिर धारै । मनमें नेकु न शङ्क विचारै ८
प्रीति रीति लखि हरि सुख पावैं । तिनके मन की साध पुरावैं ॥
देखि देखि यदुवंशी रीझैं । कोउ सशङ्क ह्वै मनमें खीझैं ९
कोउ अपने मन में अभिलाषै । कोऊ तिनके भागनि भाषै ॥
ज्यों ज्यों मोहन आवत नेरे । त्यों त्यों लेत गोप अतिघेरे १०
चकित श्याम कह्यो कहँ मैया । तबहिं यशोमति लख्योकन्हैया ॥
सपदि परे चरणन पर जाई । दृगजल पद दीन्हे पखराई ११
जाके पद मुनिजन मन ध्यावैं । शम्भु नहीं उरते बिसरावैं ॥
जा पद रेणु परशि ऋषिनारी । शिलाविमोचिदिव्यतनधारी १२
जा पद पद्म इंदिरा हाथा । प्रकटी सरिता पावन पाथा ॥
जाके पद ब्रह्मादि न पावैं । सो यशुमतिपद शीश नवावैं १३

कर गहि माता उर लपटायो । कठिन विरह की ताप नशायो ॥
लायरही छतियन ते माता । पुनिपुनिचूंबिवदनजलजाता १४
मुख मूछन की रेख सुहाई । देखि देखि जननी बलिजाई ॥
मोको यह सुख दुर्लभ भारी । मो समान को आज सुखारी १५
लखिलखियशुमतितनसुखदानी। दृगसरोज भरि ढारतपानी ॥
बारेपन की सब सुधि आई । जैसे कनियाँ बैठत जाई १६

दो० दृगजल पोंछत मातुकर, लिये बहुरि उर लाय ॥
तुम जनि रोवहु प्राणधन, जननी बलि बलि जाय १
तन नृपभूषण वसन लखि, मातु अंग नहिं माय ॥
बिसरिगयो सब विरहदुख, मनु ऐसेहि सदाय २
इहिविधि जननिहिं भेंटि प्रभु, मेटि सकल दुखद्वन्द ॥
बहुरि रहत हैं नन्द जहँ, तहँ आये सुखकन्द ३
दूरहिं तें देखत हरिहि, विवश भये अति नन्द ॥
आकुल लोटत धरणि पर, फँसे मोह के फन्द ४
कबहूं आवत सुधि कबहुँ, मुरछत शिथिल उछाह ॥
स्रवत स्वेद थरहरत तन, उमग्यो प्रेम प्रवाह ५
परे जाय प्रभु पाँय पर, लीन्हों हृदय लगाय ॥
कहा कहौं तिहि समय की, दशा बरणि नहिं जाय ६
ग्रीवा गहि हरि नन्द की, रोवत धरत न चेत ॥
भक्तन हित नाना चरित, ठानत कृपानिकेत ७
नँद नँदनन्दन मिलन लखि, धरत न कोई धीर ॥

इक पछरत इक गिरत महि, इक छिरकत मुखनीर ८
एक कहत चेतहु मनमाहीं । जीवन दिन कत मरत वृथाहीं ॥
चितवत एक निमेष बिसारे । एक न तन की सुरति सम्हारे १
इक अति चकित कहै कह कीजै । एक कहत जीवनफल लीजै ॥
हमसमाकिहि जग आजु अनन्दा । बहु दिनपै देख्यों मुखचन्दा २
एक कहत धनि आजु घरी छन । एक कहत कुरुक्षेत्रहि धनिधन ॥
इक उत जात एक इत आवै । इक आतुर मारग नहिं पावै ३
भीरहि में भामिनि धँसि जाहीं । लाज शंक सब तजि मनमाहीं ॥
कोउ सलज्ज दूरहिते दरशै । कोऊ निकटजाय पद परशै ४
एक कहत सरकहु री आली । देखनदेहु नेकु वनमाली ॥
एक खड़ी तहँ लज्जा बोरी । हम को हरि दिखरैहैं कोरी ५
लाज हमारो काज बिगास्यो । हाहा हम नहिं श्याम निहास्यो ॥
बदत होड़ तिय आपस माहीं । इक लखि आवत एक न जाहीं ६
इक कह कब की देखि रही री । अब तो मेरी बारि भई री ॥
सो कह हौंतो अबहीं आई । देख्यों नाहीं नन्ददुहाई ७
एक कहत हम पाँयन परहीं । इक कर जोरि निहोरन करहीं ॥
हौं चलिहौं सखि तेरे गोहन । मोहिं दिखैहैरी अब मोहन ८
एक कहत आवहु मम साथा । हौं तुहिं दिखरैहौं व्रजनाथा ॥
तिनमें जे हरिजू की प्यारी । षटदश सहस गोपिका न्यारी ९
जिन मन मोहे रसिकविहारी । बङ्क विलोकनि जादू डारी ॥
बंशी वश कीन्हीं व्रजबाला । मृदुमुसकाय ठगीं नँदलाला १०

लोकलाजतृणसमकरिजान्यो। सरबस धन मनमोहन मान्यो ॥
दिनकी दशा बरणि नहिं जाई। विरहविवशतनसुधिबिसराई ११
चलीं यूथकरिमिलिसबतिनमें। मिलन जात अरु युवती जिनमें ॥
नम्रवदन धरणिहिं दृग लाई। हिरदै भीतर बसत कन्हाई १२
जायपरीं चरणन अति आतुर। तिनमें ललिताजू अति चातुर ॥
विरह बिथा ब्रजकी उरखुटकी। परशत पांय लई भरि चुटकी १३
लज्जावश बोलत कछु नाहीं। घस्यो भाल दोउ चरणन माहीं ॥
तैसेही चन्द्रावलि आई। आय पांयपर शीश नवाई १४
अतिविहालकछुसुधिनहिंताही। दशन काटिलीन्हें पद माही ॥
पुनि तरवा चाख्यो रद लाई। निरखिप्रीतिप्रभुमनसुखपाई १५
राधा की गति कहत न आवै। विरह अनल कंचन तन तावै ॥
हरिहिविलोकिनयनजलबाढ़ो। कंपत अति आतुर दुखदाढो १६
दो० नीलाम्बर दुरवत वदन, सकुचत अतिहि सशंक ॥
मनहुँ घनांतर लसत छवि, षोड़श कला मयंक १
प्रीति पुरातन सुधि भई, निरखि श्याम सुखरास ॥
चित्र लिखीसी है रही, भरि भरि लेत उसास २
ठाढ़ी हरिढिग युवति मधि, बोलि सकत कछु नाहिं ॥
बहत दृगन जलधार दोउ, परत श्याम पद माहिं ३
मनमोहन चाक्रित मनहिं, कौन तीय यह आहि ॥
स्रवत नयनतें उष्णजल, इतो तपतकर आहि ४
तबहीं पद परशत दृगन, बरस्यो शीतल मेह ॥

रसिकशिरोमणि सांवरे, जान्यो राधा एह ५
अतितलफतविलपतविकल, दुरि दुरि लेत बलाय ॥
छुइ छुइकर पंकजचरण, नैनन रहत लगाय ६
नाय रही पुनि पाँय शिर, बिसरि लोक की लाज ॥
प्यारी की यह लखि दशा, विवश भये व्रजराज ७
कबहुँ प्रियहि निरखत प्रकट, निमिष टारि बलबन्धु ॥
कबहूँ उर धरि ध्यान मन, मगन होत सुखसिन्धु ८
ऐसे प्रेमफंद के माहीं। फँसे युगल छूटत हैं नाहीं ॥
कुँवरि जननि इत उत बिललावै। ढूंढत कतहुँ खोज नहिं पावै १
सखी संगकी मिलि मिलि आई। राधा कहँधौं रही भुलाई ॥
तबहीं पाई मोहन पाहीं। परीविकलकछुसुधिनाहिंताहीं २
ज्यों त्यों पकरि किनारे ल्याई। करि पटओट तहां पौढ़ाई ॥
कर पद पटकत चेत न राई। बहुतभांतिसखियनसमुझाई ३
कौन सुनै समुझै किहि बाता। स्रवतप्रस्वेदशिथिलसबगाता ॥
मोहि लियो मन मदनगोपाला। राधाजू के हाल बिहाला ४
श्याम मिलत कह इहि गति सोई। कोउकह रुज कछु भाषत कोई ॥
नाक मूंदि इक मुख जल डारे। इक फूंकत कछु पढ़िपढ़ि झारे ५
पैठ्यौ अन्तर देवमुरारी। सो क्यों छूटहि कौतुककारी ॥
कछुक बार बीते सुधि आई। हिलकी लागी श्वास न माई ६
यह लखि सब मन धीरज आयो। जान्यो श्यामविरह उरछायो ॥
पुनिआलिमिलिसमुझावनलागी। तूतो निपट लाज री त्यागी ७

जननी हरिपद ढिगतें लाई । तोको नेकहु चेत न माई ॥
जब यह उरहन सखिन सुनाई । तब घूंघुट करि अतिहिलजाई८
है सचेत हरि रही निहारी । तहां भीर नारिन की भारी ॥
जे लांबी ते लखि सुख पावैं । छोटी अति मन में पछितावैं ९
कत हम नान्हीं भई विधाता । निरखि न सकत नन्दको ताता॥
तिनहिं कहत तुम तो हरि देखे । व्रजमें निज संगी करिलेखे १०
हमहूं को अब नेकु देखावो । तौ यह सुयश बड़ो तुम पावो ॥
इक तिय कटि गहि ताहि उँचावै । सुन्दरश्यामनिरखिसुखपावै ११
एक कहति धनि भाग हमारे । हम देखे नँदनन्दन प्यारे ॥
इक मन मुदित प्रफुल्लित डोलै । जोइआवतसोइमुखतेंबोलै १२
इक कह हौं अबहीं मिलि आई । हरिको नेकहु मान न माई ॥
प्रथमहिं सबन कहे धौं कैसे । अब नाहीं हैं गिरिधर वैसे १३
भये जाय राजन के राजा । बोलत हैं नाहीं बेकाजा ॥
सो इक मुख कह करहुँ बड़ाई । मनु व्रजही में बसत कन्हाई १४
इक कह मानहुँ धेनु चराये । वृन्दावन तें अबहीं आये ॥
नटवर वेष रहित सब सोहैं । वैसहिवचनविहँसिमनमोहैं १५
भूपतिभूषण अँग वर भ्राजे । लगतचारुछविछत्रिकीलाजे ॥
परहु छार मम अँखियन माहीं । कछुकअधिकमुखरेखसुहाहीं १६
दो॰ ऐसे मिलि सब कृष्णतें, भये मुदित नर वाम ॥
कहत धन्य धनि आजु हम, नैनन देखे श्याम १
यह लखि व्रजसुरभी सकल, अतिहि उठीं अकुलाय ॥

प्रेम डोरि खैंची विवश, चलीं श्यामढिग धाय २
मन मन अति पछितात हम, कतहिं भये पशु जौन ॥
मिले सकल व्रजजनहिं हरि, हमको पूछहि कौन ३
हे मनमोहन श्याम घन, कुंजविहारी लाल ॥
वचन हीन हम दीन पशु, जानि तजी गोपाल ४
इत उत चमकत चकित चित, चितवत श्रवण उठाय ॥
हरिके देखत ही सकल, गईं धेनु मचलाय ५
गैयनकी गति श्याम लखि, लीन्हीं भरि अकवारि ॥
झुकि झुकि हेरत वदन तन, फेरत हाथ मुरारि ६
देखि दूबरी गात अति, भरि आये दोउ नैन ॥
पोंछत रज निज अंचरन, संतोषत मृदु बैन ७
यह धौरी कजरीसुता, यह रतुली की लोहि ॥
यह धूमरि खंजननयनि, अति सुख दीन्हें मोहि ८
इहिविधि हरि सबहिन तें भेंटे। विरहताप व्रजजन के मेटे ॥
जाके मन ही जैसी भावन। तैसिहि ताहि मिले मनभावन १
कहँ लौं हरि के मिलन बतावैं। अति कुटुम्ब बरणत नहिं आवैं ॥
बहुजन आवत बिनहीं नाते। मिलि मिलि जात प्रेममदमाते २
कौतुकनिरखिविबुधमनहरषत।पुनि पुनि कुसुमांजलिभरि बरसत॥
कहत धन्य गो गोपी ग्वाला। प्रीतिसहितजिनमिलतकृपाला ३
छये गगन सुर लोक भुलाने। धनिधनि कहिव्रजजननबखाने ॥
ऐसे ही भेंटे बलरामा। जेहि विधिसबनमिलेघनश्यामा ४

प्रथम नन्द यशुमति से जाई । मिले श्यामहीं लौं बलभाई ॥
व्रजजन सखा संगि ते वैसेहि । पुनि युवतिनते भेंटे तैसेहि ५
दाऊ के गुण अति गंभीरा । नीलाम्बर वर गौर शरीरा ॥
सबविधिसव्रहिनकोसुखदीन्हें । पूरण सकल मनोरथ कीन्हें ६
चन्द्रवदन दोउ वीर निहारी । चित चकोर व्रजजन बलिहारी ॥
कहत नन्द यशुमतिसुनु प्यारे । अब हमते मति होहु नियारे ७
बिछुरत मरिजैहैं पितु मैया । बिरध समय जानि तजहु कन्हैया ॥
अवधि लागि हैं प्राण हमारे । अब नहिं तजिहैं शरण तुम्हारे ८
सुनत नन्द यशुमति की बाता । मनहीं मन बिहँसत जगत्राता ॥
अति अभेद कोउ भेद न पाया । प्रभुप्रेरित जग व्यापक माया ९
अखिलअनादिनित्यसुखराशी । रोम रोम ब्रह्मांड विलाशी ॥
मिलनमुदितमनाविरहबिहाला । यहसबश्यामसज्योनटख्याला १०
मन मुसुकाय कह्यो सुखसिंधू । दीनदयाल विश्वके बंधू ॥
जनि डरपहु अपने मनमाहीं । अब वह व्यथा व्यापिहै नाहीं ११
रहिहौं तुम्हरे निकट सदाई । यों कहि हरि वे बात भुलाई ॥
सुनि मोहन के वचन रसाला । मुदित भये सब गोपी ग्वाला १२
बिसरि गई वे व्रजकी बाता । प्रमुदित निरखि मनोहर गाता ॥
तिहिछिनसकल सवारी आई । तब करजोरि कह्यो दोउ भाई १३
अमियवचनबोलतव्रजनाथा । चलियसदन सब करिय सनाथा ॥
यह सुनि सब व्रजजन हरषाने । चले सकल आनँदरस साने १४
खास सवारिन नंद यशोदा । जिन नित हरिहि खिलाये गोदा ॥

तैसी ही प्यारी को आई । चढ़ी मुदित उर राखि कन्हाई १५
छत्रपती गति चली सवारी । कौतुक लखन जुरे नरनारी ॥
जे जन मग में भीर लगावैं । तिनको छरीदार बिलगावैं १६
दो० राव रङ्क कोउ गनत नहिं, सब बिलगावत जात ॥
रतनजरी कंचनछरी, परी सकल के गात १
प्यादे अश्वसवार वर, अरु आसे बरदार ॥
चोपदार अगणित चले, करत नकीब पुकार २
यों व्रजजन ल्याये भवन, पुनि सबहिन उतराय ॥
उतराये व्रज युवति जन, पट अन्तर करवाय ३
कह्योसबनिकोउइनहिंजनि, रोकहु टोकहु जात ॥
सुनि त्यों त्यों व्रजजन मुदित, फूले गात न मात ४
ठाम ठाम नाना विविध, दिये बिछौन बिछाय ॥
सब व्रजवासिन को तहां, मोहन राखे जाय ५
यशुमतिगोपिनामिलनहित, अबहीं पुरहि पठाय ॥
नन्दहि सँग वसुदेव ढिग, लै आये यदुराय ६
देखि मिले वसुदेव उठि, मित्र मित्र कहि धाय ॥
लिये नन्दहू लाय उर, छये दृगन जल आय ७
तबहिं नन्द करजोरि युग, कहत सुनहु महराज ॥
धन्य धन्य धनि भाग हम, देखे चरणन आज ८
कह वसुदेव सुनहु नँदराई । कहँ लगि तुम्हरी करहुँ बड़ाई ॥
तुम से मित्र भागते पायो । पै हमते कछु नहिं है आयो १

तुमते उऋण होत हम नाहीं । कैसहु जनम जनम के माहीं ॥
हरि हलधर तुम हमको दीन्हे । सब विधि मोहिं कृतारथ कीन्हे २
तुव प्रसाद यह नौनिधि पाई । तुमहीं दीन्हे भई बड़ाई ॥
नेह निबाह करी तुम पूरी । त्रिभुवन में यह यश भइ भूरी ३
कंस असुर ते वंश बचायो । तुम्हरो गुण कछु जात न गायो ॥
यों वसुदेव नन्द परितोषे । बहु भांतिन सनमानि सँतोषे ४
ऐसेहि देखि देवकी माई । यशुमति को भेंटी उठि धाई ॥
कहत आजु बड़ भाग हमारे । नयनन निरखे दरश तुम्हारे ५
मथुराहू देख्यो नहिं कबहूँ । अति मनहीं अभिलाषा तबहूं ॥
यशुमतिको उर उमड़्यो भारी । नयनन जल नहिं सकत सम्हारी ६
कहत देवकी सुनहु यशोमति । तम निजमन गलानि आनहु मति ॥
काहे को चित करत उदासा । रहति सदा किन हरि के पासा ७
श्याम राम तुम्हरे सुत दोऊ । अहनिशि तुम गुण गावत वोऊ ॥
मनकरिहरिव्रजमाहिंबसत हैं । देह धारि पुनि इहां लसत हैं ८
कह यशुमति सुनु देवै माई । हौं हरिकी रहिहौं है धाई ॥
मञ्जुकञ्जमुखलखिसुखपैहौं । कोटि करहु अब व्रज नहिंजैहौं ९
गोपी परीं देवकी चरणन । कहा कहौं ताछवि की वर्णन ॥
बेनी सोहत पीठ ललामा । मनु रवि को अहि करत प्रणामा १०
प्यारी जब परस्यो पद आई । देवकि गहि तब हृदय लगाई ॥
वदन वसन करतें बिलगाई । रूप देखि मन माहिं सिहाई ११
चम्पक वरण नयन रतनारे । कोटि काम या छविपर वारे ॥

मुखद्युतिदेखतशशि अभिलाखे। जननी धन्य उदर निजराखे १२
सुनत रहे हे जिती बड़ाई। ताते हूं देखी अधिकाई ॥
सब वधुवन ते रूप उजागर। नवलासी अति लखियत नागर १३
कैसे श्याम तजी यह राधा। रूपराशि छवि अगम अगाधा ॥
मनहीं मन राधा मुसुकाई। घूंघुट शोभा वरणि न जाई १४
बिहँसत खड़े श्याम सुखदैना। प्यारिहि लखत तिरीछे नैना ॥
देवकि हूं सब वधू बुलाई। यशुमति पाँय परीं सब आई १५
दै अशीश पुनि उर ते लाई। मुदित निरखि मुख लेत बलाई ॥
कहत उयो वासर यह नीको। सुफल फल्यो सब मेरे जीको १६
दो० तब रुक्मिणि कर जोरि कह, यदुनन्दन प्रति आय ॥
मो मन अभिलाषा करिय, राधा की पहुनाय १
सुनि सप्रीति रुक्मिणिवचन, कह्यो श्याम अभिराम ॥
लैजायहु किन धाम निज, पुरवहु मो मन काम २
प्यारी मूरति प्रेम की, मन वच मम अनुरक्ति ॥
जो याको सेवन करहि, पावहि मेरी भक्ति ३
यहसुनि रुक्मिणि मुदित अति, गईं राधिका पाहिं ॥
सखिन सहित निज सङ्ग लै, आई मन्दिर माहिं ४
राधारुक्मिणि दोउ मिलीं, शोभा वरणि न जाय ॥
पुनि भेंटी गोपीन ते, उर आनँद न समाय ५
तब रुक्मिणि मनकी कहत, द्वारावति की बात ॥
जैसे हरि व्रजजनन को, भजत रहे दिन रात ६

कबहूं व्रज चरचा करत, प्रेम मगन है जाहिं ॥
ऐसे रुक्मिणि मुदित मन, गोपी मण्डल माहिं ७
तिहिक्षण आये श्याम तहँ, हृदय न हर्ष समाय ॥
जहँ बैठी राधाकुँवरि, हरि बैठे ढिग जाय ८

यह सुनिकै रानी सब आई । सतभामादि भामिनी धाई ॥
चलहु लखन अहिरनकी पांती । जिनको हरि मानत बहु भांती १
सबके मन अभिलाषा भारी । हमको श्याम देखावहु प्यारी ॥
एकहि रूप सकल व्रजगोरी । इनमें को वृषभानुकिशोरी २
भामा कहत बतावत नाहीं । लहत बड़ाई कछु या माहीं ॥
हँसतश्याम अति बिहँसतप्यारी । मन मन कहत ढीठ यह नारी ३
मारुत बल घूंघुट फहरावै । सो कछु शोभा बरणि न आवै ॥
नीलाम्बर में सोहत कैसी । मनु घनमध्य तड़ित छवि जैसी ४
तबहीं सतभामा पहिंचानी । रूप अनूपम निरखि सिहानी ॥
मन मन कहत कहाविधि कीन्हों । इतनो रूप अहीरिन दीन्हों ५
ठौर कुठौर विचारत नाहीं । शठन देत नृप घरनिन माहीं ॥
नेकु झलकलखि भइगति ऐसी । नीके निरखत हैहै कैसी ६
तबहिं श्यामघन मनकी जानी । हँसि घूंघुट खोले निज पानी ॥
ज्यो इन्दु बादरहि बिदारी । जब नीलाम्बर मुखते टारी ७
तीनभुवन की सुन्दरताई । श्री राधा के वदन सुभाई ॥
सतभामादि निरखि सब रानी । कछु मुर्झाय बहुरि सकुचानी ८
श्याम सबन को गर्व नशायो । श्यामा के मन हर्ष बढ़ायो ॥

तब श्रीयदुनन्दन सुखदाई। सब रानिन के मन की पाई ९
एक बात भाषत मैं नीकी। सुनहु सकल यह तुम्हरे जीकी ॥
नाना विधि टोना जग माहीं। ताकाहू के वश मैं नाहीं १०
मोको वश जो चाहै कीनो। टोनो आयो एक नवीनो ॥
सुनत सकल चकित मनमाहीं। भामा कहत कहत कत नाहीं ११
तब बोले व्रजदूलहराई। गर्वप्रहारी जन सुखदाई ॥
जो प्यारिहि सेवै मन लाई। ताके वश मैं रहौं सदाई १२
या सम टोना त्रिभुवन माहीं। वशीकरन मोहिं दूजो नाहीं ॥
सुनि रुक्मिणि जू के मनमानी। धन्यभाग आपुन को जानी १३
दोउ तन राधा रुक्मिणि सोहैं। मध्य श्यामसुन्दर मन मोहैं ॥
अरुचहुँपाससकलकामिनिसी। जनु घनघेरिरही दामिनिसी १४
अधिक तृषित दृग तृपित न पावैं। दरश सरस पीवत सचु पावैं ॥
व्रजललना हरि रूप लुभानी। अवलोकतनिजदशाभुलानी १५
नखद्युति मनहुँ इन्दु परकाशा। जनमन उदित विमलआकाशा॥
चरण सरोज चारु अरुणाई। कुलिशांकुशध्वजचिह्नसुहाई १६
दो० जंघ युगल शोभित मनहुँ, कदलीथंभ स्वरूप ॥
निरखि क्षीण कमनीय कटि, विपिन बस्यो मृगभूप १
सुभग उदर लावण्यनिधि, नाभि भँवर छवि छीन ॥
तहां माल मणि रत्न जनु, त्रिबलिलहरिद्युतिदीन २
किधौं बाग मनसिज कियो, नाभि सुधारस कूप ॥
मणि पँचरँग फूले विविध, रोमावली अनूप ३

उर मरकत गिरिपर मनहुँ, बगपँतिगजमणिमाल ॥
भुज विशाल मानहुँ उभै, खेलत हैं वर व्याल ४
कम्बुकण्ठ त्रय रेख युत, शोभितअतिअभिराम ॥
भ्राजत मणि शुभ कौस्तुभ, जाकी प्रभा ललाम ५
चिबुक मनोहर दशन द्युति, दामिनि लखत लजाय॥
कलकुण्डल झलकत श्रवण, शोभा वरणि न जाय ६
नासा शुक सुन्दर लसत, अधर बिम्बफल हेत ॥
पहुँचत नहिं ललचात जनु, अति अद्भुत छवि देत ७
लोचन लोल कपोल पर, कुटिलअलकबिथरान॥
नीलकमल पर मधुप कुल, मनहुँ करत रस पान ८
बंक भ्रुकुटि मधि तिलक बनाई । ता छविकी उपमा नहिं पाई ॥
विशद भाल मर्याद विहाई । उमँगि चली जनु सुन्दरताई १
शीश किरीट कान्ति की शोभा । लाजत कोटि सूर्य की ओभा ॥
हरिछवि निरखिविवशव्रजगोरी। तन मन बिसरिभईमति भोरी२
अरस परसपर रूप निहारैं । चितवत पलक न अन्तर डारैं ॥
हरि यह दशा निरखि सुख पावैं। हाव भाव करि प्रेम बढ़ावैं ३
जा पदकंज सनक उर लावैं । नारद आदि निरन्तर ध्यावैं ॥
पदपराग रज याँचत योगी । तिहिव्रजवनितनमान्योभोगी ४
हरि को संतत भक्ति पियारी । ज्यों त्यों कोउ भजै नर नारी॥
जिनहिं भई हरिपद परतीती । भजहिं श्याम रिपुदलमनजीती५
लोचनहरि दरशन पुटप्यावैं । श्यामसुयशश्रुतिसुनिचितल्यावैं॥

नासा श्याम सुगन्ध लुभानी । रसना हरि हरि बोलत बानी ६
सब अंग ह्वै श्यामहिं उर ल्यावैं । एकहु श्वास न हरि बिसरावैं ॥
जीवन मरण न सुख दुख तिनको । केवल हरि पद धन है जिनको ७
खान पानको व्यसन तजैं जे । निष्कामी ह्वै हरिहि भजैं जे ॥
तिनको हरि नहिं गहरु लगावैं । कोटि कोशते क्षण में आवैं ८
अगम सुगम अरु तृणहिं सुमेरू । करत भक्तवश रंक कुबेरू ॥
वेद विदित निगमागम गाई । भक्तवश्य प्रभु रहत सदाई ९
प्रथम श्याम जांचत निजजनको । दृढविश्वासलखतातिहिमनको ॥
गोपरवनि प्रभु नीके जांची । एकहु अंग नहीं सो कांची १०
आपुहि कान्ह भईं व्रजबाला । प्रेममगन हिय हर्ष विशाला ॥
सरबस बिसरि श्यामरस पागीं । मनहुँ रंक निधि लूटनलागीं ११
कैधौं मानहु गोपी यूथा । निरखत वधुहि चकोर वरूथा ॥
व्रजतिय प्रेम वरणि नहिं जाई । जेहि लखि ऊधो ज्ञान भुलाई १२
एकहि दशा सकल व्रजगोरी । कछुक अधिक वृषभानु किशोरी ॥
धन्य धन्य श्रीमुखते भाख्यो । गोपिनसों अन्तर नहिं राख्यो १३
तुम सब अति मम प्राणपियारी । मोते कबहुँ पलक नहिं न्यारी ॥
कहा भयो हौं बिछुरयों जोई । मनते बसत सदा व्रज सोई १४
सुनि गोपी हरि अमृतबानी । भईं प्रफुल्लित अति सुखमानी ॥
भोजन बार जानि घनश्यामा । गये नन्द यशुदा के धामा १५
तब प्यारिहि रुक्मिणी उठाई । निज स्नान मन्दिर में ल्याई ॥
पुनि अतिमज्जन करिअन्हवायो । जलसुगन्धअतिचितहुलसायो १६

दो० निज करते बेनी गुही, कोमल केश बनाय ॥
अङ्ग अङ्ग भूषण सज्यो, मंजुल पट पहिराय १
खञ्जनदृग अञ्जन अँजो, बेंदी भाल सवाँर ॥
अति सप्रीति प्यारिहि सकल, कीन्हे सुभग शृंगार २
शोभा अद्भुत को गनहि, सहज रूपकी राश ॥
नवसत साजि शृङ्गार मनु, किय शशि कोटि प्रकाश ३
इहिविधि सब ब्रजसुन्दरिहि, भूषण वसन बनाय ॥
पुनि कीन्हे भोजन त्रिविध, व्यञ्जन वरणि न जाय ४
मृदु मंजुल पकवान सुठि, सरस मिठाई चारु ॥
षटरस नाना भाँति के, किये अनेक प्रकारु ५
करत बियारू राधिका, सब ब्रजकुँवरि समेत ॥
परसत रानी रुक्मिणी, निजकर करि अतिहेत ६
सतिभामा अति मन कुढ़त, देखि न हृदय समाय ॥
पुनि पुनि हँसि हँसि कहत मुख, वाणी व्यंग्य सुनाय ७
कत परसत पकवान मृदु, भावत है है नाहिं ॥
दूध दही घृत देहु ज्यों, रुचिसों भोजन खाहिं ८
सुनि सुनि सतिभामा की बानी । गोपी आपस में बतियानी ॥
यह रानी अति खोटी भारी । घूँघुटमें मुसकावत प्यारी १
मनमें कहत और नहिं कोई । यह रानी सतिभामा होई ॥
भोजनकरि पुनि अँचवन कीन्हा । रुक्मिणि सबकर बीरा दीन्हा २
भयउ अस्त रवि निशि प्रकटानी । निज२ सदन गई सब रानी ॥

इहां नन्द यशुमति के पासा । करत बात हरि परम हुलासा ३
निशि बड़ि जानि सेज बिछवाये। यदुनायक निज मन्दिर आये ॥
रुक्मिणि तब प्यारिहि पौढाई । सबकी सादर सेज बिछाई ४
आपुन हरिके मन्दिर आई । चापन लगी चरण सुखदाई ॥
मनमोहनको नींद न आई । रुक्मिणि प्रति यों कह्यो बुझाई ५
अबलौं प्यारी पौढ़ी नाहीं । याते नींद न मोदृग माहीं ॥
तब रुक्मिणि कर जोरि सुनाई। हौं प्यारिहि प्रथमहिं पौढ़ाई ६
श्याम कह्यो देखहु फिनजाई । वाको नींद नेकु नहिं आई ॥
राधा को जब जननि सुवावै । तब सो क्षण तेहि दूध पियावै ७
परी बानि यह बालपन की । को जानै अब वाके मन की ॥
यह सुनिकै रुक्मिणि उठिधाई । तुरतहि निजकर पय औटाई ८
कनककटोरे में ढरकायो । अतिहि उतावल में न सिरायो ॥
हेत सहित अक्षर दै ल्याई । राधाको जागतही पाई ९
फूंकि फूंकि पय प्यारिहि प्याई । पुनि आपुन हरिमन्दिर आई ॥
बहुरिलगी त्यों चरणन चापन।सो करि हरिखैंच्यो पग आपन १०
रुक्मिणि कहत गईहौं नीके। अबहीं कौन बिथा भय जीके ॥
प्यारीको तातो पयप्याई । याते जस्योपरचो पग आई ११
सोयरहो न सुनी अब ताई। अचरज बात न परत पत्याई ॥
सुनुरुक्मिणि मैं सांची भाखौं । तुमते कछु अंतर नहिं राखौं १२
सदा एकरस मन क्रम बानी । राधा मोपै रहत लुभानी ॥
उरमें राखत चरण हमारे । ताते परे दूधके छारे १३

निशि वासर मोरोही ध्याना । मोहिं छांड़ि तिहि बात न आना ॥
मैंहूं वाते होत न न्यारो । झूठ कहौं तो शपथ तुम्हारो १४
तबहिं श्याम निज पांयदिखाई। तब रुक्मिणि मन अति पछिताई॥
प्रीति समुझि मन में सुखमानी । धन्यधन्य राधाको जानी १५
बहुरि कहन हरिजूसों लागी । हौं कह तुम्हरी नहिं अनुरागी ॥
बसत नहीं कत मो उर माहीं । साँच कहहु प्रभु यह हम पाहीं १६
दो० श्याम कही सुनु रुक्मिणी, ममपद तो उर नाहिं ॥
सदा बसत तुम्हरे चरण, मेरे हिरदै माहिं १
ऐसी विधि बहु बात कहि, रुक्मिणि को समुझाय ॥
दीरघ रजनी जानि अति, शयन कियो यदुराय २
इत प्यारीको कल नहीं, बढ्यो हृदय दुखपीन ॥
तरफरात अति सेजपर, जलविहीन जिमि मीन ३
नींद न आवत नयन में, कहत अलिन प्रति बैन ॥
नन्दनन्द व्रजचन्द वर, कहां गये सुखदैन ४
मिले श्याम जान्यो जगत, मिट्यो न विरह वियोग ॥
हौं विरहिन विरहिनि रही, घरघर भोगत भोग ५
बारबार आवत मनहिं, मरिय सखी कछु खाय ॥
काहि परेखो कीजिये, वे रानिन के राय ६
आशा लगि तव प्राण है, अब न राखिहौं एह ॥
जीव जाहु तौ जाहु बरु, निबहो श्याम सनेह ७
कहत सखी सुनि राधिका, कत मन होति अधीर ॥

को जानै हरि आवहीं, समुझि हमारी पीर ८
अन्तरयामी मदन गुपाला । प्रकट भये मोहन ततकाला ॥
गगन बरण राजीव बिलोचन । शीशशिखण्ड मदनमद मोचन १
कुण्डल युगल मनोहर कानन । कोटि दिनेश लजतद्युति आनन॥
अलक झलक कपोल पर सोह्यो। देखत व्रजयुवतिन मन मोह्यो २
चितवनि चारुनिराखिछवि भूलीं । अम्बुजइव व्रजभामिनिफूलीं॥
प्यारी की गति कही न जाई । मनु ससि सूखत बरषा पाई ३
मन भावन लीन्हो उरलाई । गन दामिनि छबि लखि ललचाई॥
भये परस्पर युगल अधीरा । समुझि न परत प्रेमकी पीरा ४
अति प्रबोध कीन्हे सुखदाई । व्रज की बिछुरन बिथा नशाई ॥
पुनि वैसहि गोपिन उरलायो । सकलताप सन्ताप नशायो ५
इतने दिनन कहां हे प्यारे । अब कबहूं जनि हूजै न्यारे ॥
सुधिकरि कह्यो पकरि दोउ हाथा । काहे कियो कूबरी साथा ६
भोगत भोग कंसकी दासी । हमको पठयो योग उदासी ॥
यह सुनि श्याम मन्द हँसि दीन्हो । क्षोभसकल व्रजको हरिलीन्हो ७
बातनहीं दीन्हों बहराई । लागे करन चरित सुखदाई ॥
हास विलास परस्पर करहीं । वे व्रजकुञ्जकेलि मन धरहीं ८
श्यामा श्याम निरखि इकठौरैं । गोपी रासमण्डली जोरैं ॥
एकन करत प्रेमकी घातैं । सुमिरि सुमिरि सोइ रसकी बातैं ६
वे व्रज भाव धरत व्रजबाला । लखि अति सुख पावत नँदलाला ॥
जाके मन जो जैसी भाई । ताकी त्यों अभिलाष पुराई १०

श्यामहिं बिसरि गईं सब रानी । और सकल बिसरी रजधानी ॥
रुक्मिणितहँ इ रहत ब्रजजनमें । लखिलखिचरित अनन्दितमनमें ११
हरि राधाके वदन निहारे । अपने भागहि धन्य विचारे ॥
श्रीमुख कही सुरोना कीन्ही । त्रिभुवनपति निज वशकरि लीन्ही १२
और सकल महलनके माहीं । विरह बिथा फैली चहुँघाहीं ॥
धरत न धीर पीर अतितनमें । पै न बसाइ कुढ़त मन मनमें १३
कोउकहहम कहँ विधि प्रतिकूला । उनको सबविधि भा अनुकूला
यों महलन बिललावत रानी । व्रजजन में अटके दधि दानी १४
नव सुख लेत सकल व्रजवामा । रहतिं श्याम सँग आठो यामा ॥
हरिमुखनिरखि मगनमनसबहिंन । मानहुँहमबिछुरे नहिंकबहिंन १५
भांति भांति रँग रस उपजावैं । नानाविधि सुख कहत न आवैं ॥
काहू मन कुछ साधन राखैं । पूरणभई सकल अभिलाखैं १६

दो० नंद यशोदाहूं निकट, रहत सदा गोपाल ॥
बाल चरित्र करत तहां, कौतुक सिन्धु कृपाल १
यशुमति वैसहि श्याम हित, गोरस रखति जमाय ॥
धौरी धूमरि धेनु पय, प्रीति सहित औटाय २
हरि रुचि लहि नबनीत सद, मथति आपने पान ॥
माँगि माँगिकै खात नित, त्योंहीं श्याम सुजान ३
वदन प्रभा निन्दत विधुहि, लोचन सरस विशाल ॥
जलद श्यामतन पीत पट, उर मतङ्गमणि माल ४
चरण सरोरुह अरुण छवि, महिमा वरणि न जाय ॥

जिहि सुवास वश ह्वै बँध्यो, शिव मन मधुप लुभाय ५
सो शिशुलौं ठानत चरित, नन्द सदनके माहिं ॥
क्षणक्षण नवलीला करत, वरणत आवै नाहिं ६
कबहूं लोटत गोदमें, अङ्कन माय यशोद ॥
सखन संग खेलत कबहुँ, बाढ़त प्रेम प्रमोद ७
देखिदेखि सुर सिद्ध मुनि, पुनि पुनि मन ललचाहिं॥
कहत धन्य धन व्रजजनन, इन सम हम भये नाहिं ८
तहँ ऋषि हरि दरशन को आये । जे कुरुक्षेत्र क्षेत्र में छाये ॥
मारकण्ड शुक व्यास सप्तमुनि । नारदादि जे महातपोधनि १
तिनहिं लेनहरि अग्र सिधाये । सँग हलधर वसुदेव सुहाये ॥
स्वागत कहि पद शीशनवाये । ऋषियन आशिष वचन सुनाये २
हरिकी छवि अतिअतुल विलोकी। भये मगनमन सकहिं न रोकी॥
मुनिकी दशा निरखि यदुवीरा। स्रवत सरोरुह नयनन नीरा ३
करते करगहि मन्दिर ल्याये । मुनि जन मगन प्रेम जल छाये॥
अरघ पाद्य दै पूजा कीन्हा । सादर सबहिं बरासन दीन्हा ४
पुनि कर जोरि कह्यो यदुराई । बड़ी कृपा कीन्ही ऋषिराई ॥
जाके दरशन देवहिं दुर्लभ । सो प्रभु हम पाये अति सुल्लभ ५
कोटि कोटि जप तप व्रत कीजै । तीरथ जाय दान बहु दीजै ॥
इहि सब किये लहै फल जोई । सत्सङ्गतिसों क्षणमें होई ६
सकुचि कह्यो मुनिवर विज्ञानी । क्यों न कहौ प्रभु ऐसी बानी ॥
राखत जनकी सदा बड़ाई । गावत वेद विरद चलिआई ७

सकल विदित तुम्हरी प्रभुताई । शिव सहसानन पार न पाई ॥
नेति नेति कहि तिनहुँ बखानत । सो तुम हमरी अस्तुति ठानत ८
तुम परब्रह्म विश्वकरतारा । नमो नमो तुम बारंबारा ॥
तुमहिं भजहिं जे कृपानिधाना । तिनको उभयलोक कल्याना ९
नाम तुम्हारो आनँदमूला । सुखप्रद सकल शमन भवशूला ॥
जप तप तीरथ दान बतावत । लोगनके मतिको भरमावत १०
तुम सबके गुरु सबके स्वामी । तुम सबहिन के अन्तर्यामी ॥
अद्भुत सगुण चरित्र तुम्हारा । जिहि भजि नर उतरहिं भवपारा ११
सुख सन्दोह सदा अविकारा । नरतन धर्यो हरण भुवभारा ॥
तुम निजरूप दुरायो ऐसे । दारुमध्य दावानल जैसे १२
कोउ पति पुत्र सगे करि मानत । कोऊ शत्रु मित्रकरि जानत ॥
तुम्हरी माया जगतउपाया । जैसे को तैसे मग लाया १३
जापर कृपा तुम्हारी होई । रूप तुम्हारो जानै सोई ॥
पुरुष पुरातन अविगति गामी । जय हरि बारबार प्रणमामी १४
सुनहिं पुराण गृही गण गावैं । सिद्ध मुनीजन तारी लावैं ॥
प्रेम भक्ति बिनु मुक्ति न होई । शकल ग्रन्थ हम देखे जोई १५
नाथ कृपा अब हमपर कीजै । सगुणभक्ति आपनि प्रभु दीजै ॥
इहिविधि मुनि हरिके गुणगाई । पुलकित प्रेम रहे अरगाई १६

दो० सुनि मुनिजनके वचनवर, बिहँसे श्यामसुजान ॥
दिये कृपाकरि तिनहिं हरि, सगुणभक्ति वरदान १
हरि माया मोह्यो जगत, पहिंचानत कोउ नाहिं ॥

श्रीवसुदेव न जानहीं, अरु बपुरे किन माहिं २
ऋषिसन तब वसुदेव तहँ, कह्यो जोरि युग हाथ ॥
दरश दियो जन जानि मोहिं, कीन्हों नाथ सनाथ ३
शमन सकल अघ दरश तुव, पापी पावन होय ॥
पारस परसि कुधातु ज्यों, डारत अवगुण खोय ४
जैसे मोपर कृपा करि, दरश दियो ऋषिराज ॥
उपदेशिय प्रभु ज्ञान कछु, टूटहिं कर्म समाज ५
हौं विषयी वश मोहके, गृह सुख में लवलीन ॥
इन्द्रियगण के रस विवश, रहत सदा आधीन ६
सतसङ्गति सेयो नहीं, कियो न जप तप याज ॥
बादि गँवायो जन्मनर, अजहुँ न आयो बाज ७
जाते बाढ़ै धर्म प्रभु, होहि कर्म दल पीन ॥
सो उपाय मोहिं भाषिये, तुम मुनि प्रेम प्रबीन ८

सुनि वसुदेव वचन यों भाई । विहँसि कह्यो तिनते मुनिराई ॥
जासु तनय बलराम कन्हाई । जप तप तिनके को अधिकाई १
सब ब्रह्मांड उदरहै जाहीं । ते प्रभु विहरत तव गृहमाहीं ॥
अलख अवद्य अखंड अभेवा । कृपा कटाक्ष सु बंछहिं देवा २
जाको खोजैं विधि भव योगी । ते तव भवन आयभे भोगी ॥
तुम सम भाग न त्रिभुवन माहीं । मायावश सो जानत नाहीं ३
घट घट मध्य श्याम को बासा । सकल ठौर ज्यों भानु प्रकासा ॥
हरिको रूप लखैं यों जानी । तिनकहँ कहैं भक्त विज्ञानी ४

ताते मन वच क्रम करि मानौ । देव देव इनहीं को जानौ ॥
अलख निरंजन ब्रह्म कहावैं । भक्त वश्य प्रभु तनधरि आवैं ५
रमारमण गंजन भवभीरा । जनरंजन भंजन परपीरा ॥
ऐसे प्रभुहि भजइ नहिं जोई । दीन मलीन दुखित अति सोई६
सुर नर मुनि इनहीं को ध्यावैं । चारि पदारथ सहजहि पावैं ॥
तुमको इहि जप तप बैरागा । केवल हरिपदते अनुरागा ७
या सम धर्म न दूजो कोई । हरिपदकी महिमा नहिं गोई॥
यद्यपि यथायोग व्यवहारा । कहत तुमहिं यह श्रुति अनुसारा८
परम सुथल कुरुक्षेत्र उदारा । इहां करहु तुम मख विस्तारा ॥
सुनि ऋषिगिरा परम सचुपायो । निरखत हरिहि हर्ष हियछायो९
तब मुनीश आज्ञा चित लाई । यज्ञ करनको सुदिन दिखाई ॥
जिहिविधि ऋषि अनुशासन दीन्हा तिहिविधि सुजन आज्ञाकीन्हा
करि प्रणाम आयसु शिर धारी । तिन सामग्री सकल सवांरी ॥
देश देशते भूपति आये । जिन सबहिन वसुदेव बुलाये ११
रानी सब रनिवासहिं आई । सादर सबको भवन दिवाई ॥
बहुविधि होहिं नित्त ज्योनारा । परसत भोजन सुघर सुवारा १२
अन्न वसन बहु धाम भराई । ऋद्धि प्रताप वरणि नहिं जाई ॥
पुनि सब विप्र वृन्द को बोले । बहुत भांति दिये दान अतोले १३
परम रुचिर वेदिका बनायो । विधिवत मुनिजन यज्ञ करायो ॥
भयो यज्ञ तहँ अतिहि उदारा । सम्पतिकी कछु रही न पारा १४
कमलापति जिहिसुत कहवाहीं । कमला आपु लुब्ध गृहमाहीं ॥

तहां ऋद्धिकी कौन चलावै ।शक्र सम्पदा निरखि लजावै १५
पुनि भूपन पहिरावन दीन्हा । अति सन्मान विसर्जन कीन्हा ॥
मुनिजन गये आपने धामा । हृदय राखि सुन्दर घनश्यामा १६
दो० परम मगन वसुदेव मन, निराखि श्याम बलराम ॥
गौर श्याम शोभा अवधि, रूपपुञ्ज गुण धाम १
सुनि सुनि हरि हलधर सुयश, देवै अंग न माय ॥
आनन्दित रनिवास सब, बासर सुखद बिहाय २
मुदित गोप गोपी सकल, नन्द यशोदा मात ॥
निशिदिन जात न जानहीं, परम प्रफुल्लित गात ३
व्रजजन परमानन्द मय, परिपूरण मनकाम ॥
प्रमुदित निरखत श्यामनित, लोचन सुखद ललाम ४
ऐसी विधि कुरुखेत में, बीते दिवस अनेक ॥
व्रजवासिन जान्यो नहीं, मनहुँ भयो क्षण एक ५
तब इकदिन कहि देवकी, हरिप्रति सब समुझाय ॥
बिसरि गयो तुहि द्वारका, रह्यो आइ इत छाय ६
व्रजजन अतिप्रिय जानि तुम, कह्यो न अबलौं याहि ॥
कहँलौं करिये कान तिन्ह, रहत बनत इत नाहिं ७
विनशत है तुम बिन सकल, राज काज नयनीत ॥
चलहु जाय सुधि लीजिये, बहु दिन भये व्यतीत ८
सुनत श्याम देवैकी बानी । अपने हूं मनमें यह ठानी ॥
व्रजजन मिलन कह्यो इकबारे । अवधि बदे सुवचन प्रतिपारे १

हरिके वचन अन्यथा नाहीं । जोइ भाषत सोइ करत सदाहीं ॥
वचनहेत प्रभु बलि के द्वारे । ठाढ़े अजहूं होत न न्यारे २
वचन हेत गृह तजि रघुराई । पुनि बहु भरत जाय समुझाई ॥
बहुरि अवध तन किये न आनन।सीय सहित सेयो प्रभु कानन ३
वचन हेतु जन सुत कहवावैं । तजि वैकुंठ गर्भ में आवैं ॥
वचन हेतु यशुमति नँदजाये । बालपने हित करि पय प्याये ४
वचन हेतु कुरुक्षेत्र हि आये । व्रजवासिन के विरह नशाये ॥
पुनि सुरकाज हेतु सुर राई । द्वारावति को सुरति उठाई ५
गुणगम्भीर उदधि यदुराई । देवै प्रति तब कह्यो सुनाई ॥
व्रजजन जाय विदा अब कीजै । आपुन द्वारावति सुधि लीजै ६
वे सब रहन इहां करि जाना । कत दुबिधा में राखिय प्राना ॥
ऐसे कहि घनश्याम सिधाये । नंद यशोदा के ढिग आये ७
मनहीं मन शोचत गिरिधारी । बहुरि कह्यो करजोरि बिहारी ॥
इतने दिनन रहे तुमपासा । भये सकल विधि पूरण आसा ८
तुम्हरे चरण तज्यो नहिं जाई । पै अति आय परी कठिनाई ॥
सुनि यह यशुमति नन्द सकाने । कहत कहा हरिपरत न जाने९
श्याम न सन्मुख शीश उठावैं । कम्पत बदन बैन नहिं आवैं ॥
बहुतदिवस बीत्यो इहिठाहीं । सुख में जानि परयो दिन नाहीं १०
पुरी द्वारका में कोइ नाहीं । समुझि सुशोच भयो मनमाहीं ॥
याते याको आयसु दीजै । आवजाय व्रजकी सुधि लीजै ११
जब यह वचन कह्यो बलवीरा । नन्द यशोदा भये अधीरा ॥

गिरे धरणि नयनन बह वारी। कहत न ऐसी कहहु मुरारी १२
हे मोहन जीवन व्रजनाथा। वृद्ध बयस जनि करहु अनाथा॥
व्रजमें जाय कहा सुख लैहैं। तुम बिनु काको निरखिसिरैहैं १३
तहँ वसुदेव देवकी आई। दशा देखि नयनन जलछाई॥
कहत नन्द मोको सँग लीजै। यशुमति रोवति नेकु न धीजै १४
मैं यदुनन्दन धाय कहावत। धायनहूँ तो मान बढ़ावत॥
हौंतो कछू चहतहौं नाहीं। मोको रहन देहु गृहमाहीं १५
हमरहु सरबस गोधन लीजै। नेकु कन्हैयहि देखन दीजै॥
सुनि सुनि हरि भरिलेत उसासू। वारिज लोचन मोचन आसू १६

दो० विरह व्यथा व्याकुल सकल, व्रजवासी नर नारि॥
जित तितही रोवत सकल, परिगयो हाहाकारि १
अति खरभर भइ भीर तहँ, सबके वदन उदास॥
मनु कीन्हें कुरुक्षेत्र में, करुणा आय निवास २
कह्यो हरि हि वसुदेव तब, हम इतते टरि जाहिं॥
यह सन्ताप कलाप दुख, देखि सकत दृग नाहिं ३
मोहन मनहिं विचार करि, व्रजजन प्रेम अधीर॥
जो हठकरि पठवहु इनहिं, मरि जैहैं ममपीर ४
तव प्रभु कीन्हीं युक्ति निज, माया दीन्हीं प्रेर॥
जीव चतुर्दश भुवन जिन्ह, करि राखे सब जेर ५
जा माया के वश सकल, नारदादि सुर सिद्धि॥
क्षणमें देत भुराय निज, रहत नेकु नहिं बुद्धि ६

एकन समय विरञ्चि के, दिये बुद्धि बिसराय ।।
हरि ल्यायो हरिके जबहिं, व्रजतें गोपरुगाय ७
मथ्यो सिन्धु जब अमिय हित, झगरे सुररुसुरारि ।।
मूरति भइ तब मोहनी, मोहि रहे मदनारि ८

तहँ व्रजजनकी कौन चलावै । हरिकी माया कहत न आवै ।।
फैलिगई चहुँ ओर उदासी । चलन चलन भाषत व्रजवासी १
मायाविवश रही सुधि नाहीं । चले सकल व्रजवासी जाहीं ।।
गाय बच्छ धाये तिन साथहिं । उलटि न कोउ देखतव्रजनाथहिं २
जा माया के वे गुणभारी । ताके वश न भई इक प्यारी ।।
यह सुनि प्रश्न करत जो कोई । राधा कत न भई वश सोई ३
पूरण माया आपुहि राधा । इक गुण ताहि करहि कह बाधा ।।
अग्निराशि में ज्यों चिनगारी । त्यों माया वृषभानु दुलारी ४
बैठिरही रुक्मिणि गृह प्यारी । बहुविधि समुझावत वनवारी ।।
राधा चित्त नेकु नहिं डोलै । बहुरि श्यामते ऐसे बोलै ५
वे दिन बिसरिगये मनमोहन । फिरत रहे मम गोहन गोहन ।।
मोहित चरित अमित हठठाने । बिछुरतही ह्वै गये बिराने ६
नेकु राखि यहि दृग व्रजवारे । ऐसे निठुर होत कत प्यारे ।।
यों कहि मौनरही ह्वै प्यारी । तब हरि अपने मनहिं विचारी ७
सतिभामादिक नारि बुलाईं । तुरतहि सकल तहाँ चलि आईं ।।
नैननकी सैनन करि तिनको । कह्यो सबन समुझावहु इनको ८
यह सुनिके मनमें हर्षानी । प्यारी प्रति बोलीं सब रानी ।।

यदुनायक जो बात बखानत । राधा सो कत नहिं मन आनत ९
तुमसम जग चातुर को नागरि । अति परबीन सकल गुण आगरि ॥
समुझि देखु अपने मनमाहीं । यामें कछू बड़ाई नाहीं १०
पर घर बैठिरही हठ ठानी । एकहि बार छाँड़ि कुलकानी ॥
राधा मोहन के रससानी । कौन सुनै समुझै किहिबानी ११
इक गोविन्द ध्यान उरमाहीं । दूजी और वासना नाहीं ॥
श्यामबिना जीवन धृग जगमें । को फिरिहै चलि हरिहितमगमें १२
उदरहि मारि कटारिन मरिहौं । बिछुरन विरह ताप नहिं जरिहौं ॥
बरु बटि गरल करहुँ करपाना । ताल बूड़ि तजिहौं नतु प्राना १३
इहिविधिध्यारी मीचु विचारी । श्याम बिथा बिछुरन लखिभारी ॥
परी दृष्टि सरवर पर जाई । निरखि अगाध नीर मनभाई १४
मनमें धरि मनभावन प्यारे । वे व्रजबनिके सुखन सँभारे ॥
उमँगि परी सरमें सुखपावन । विरह अनलकी ताप नशावन १५
भयो कंठलौं जल तिहि ठाहीं । जनु सरसिज सोहत सरमाहीं ॥
हरि चरित्र जानो नहिं जाई । सन्तत निजजनके सुखदाई १६

दो० प्यारी प्रेम निरखि कुढ़त, भामा भामिनि अङ्ग ॥
इहि लक्षण लखिपरत मुहिं, लैजैहैं हरिसङ्ग १
रोष विवश नहिं रहि सकत, हरि सन्मुख आसीन ॥
कहत परायो पीव कहँ, लैहै जोरन छीन २
खिझतभये लोचन अरुण, बोलत अति कटुबोल ॥
शालत वे जे दुखसहे, कहे सुमन के खोल ३

बहुत दिननलौं सुख कियो, सो अब भूलहु काह ॥
जाय बैठि ब्रजखरक निज, अन्त परायो नाह ४
वासुदेव भाषत जगत, छपनकोटि यदुनाथ ॥
अब इनको नहिं फबत यह, कियो तुम्हारो साथ ५
द्वैदिन शिशुपन ह्वैगयो, दुहत रहे जब धेनु ॥
किये रासरस रङ्ग वन, फिरत बजावत बेनु ६
नृप तनया सोरह सहस, बरी एकसै आठ ॥
इत प्रीति अब को गनहि, भई महल की ठाठ ७
सेवहु ग्वाल गवाँर निज, लायक जानहु जेह ॥
लोकवेद तजि हठ करत, पैठत हैं पर गेह ८

कुल युवतीकी बातहि न्यारी। निबहत नेम नाहकी प्यारी॥
जननी जनक समर्पत जाही। तजत न कबहुँ वधू कुल ताही १
इन बातन आवत नहिं लाजा। झगड़त पर पीतम के काजा॥
सुनि सरोष भामाकी बानी। सर ते बोलीं राधा रानी २
कह कुढि कुढि इतनो दुखपावै। ये गुण कान्हहि नेकु न भावै॥
इतनो गर्व करत मनमाहीं। जनु अरु कोउ जग ब्याह्यो नाहीं ३
सकल चहूं दिशि ब्याहै होई। प्रेम पन्थ पावत नर कोई॥
यह गावत सद ग्रन्थन माहीं। प्रेम बिना नर पावत नाहीं ४
नेम धरयो तिन नेकु न जाने। रहे आपने गर्व भुलाने॥
हरि कबहूँ किहि नाते नाहीं। होत प्रेम वश श्याम सदाहीं ५
हीन वरण कुलजाति न जाने। केवल रहत प्रेमरस साने॥

अधम उधारण हरिको बाना । गणिका तारयो सब जग जाना ६
केवट कीश गृध्र गज तारे । व्याध निषाद निकृष्ट उधारे ॥
बाल सुतादि प्रभंजननन्दन । तारे कपिवृन्दहि रघुनन्दन ७
विद्या भूति बुद्धि चतुराई । इन बातन रीझत न कन्हाई ॥
नीच कुचील खलहि नहिं देखैं। केवल प्रेम भक्ति करि लेखैं ८
छपन कोटि यदु नातेवारे । तिनते श्याम कितो हित पारे ॥
व्रजवासी जन अहिर गवाँरा । ते हरिजूके प्राण अधारा ९
प्रेमहिं हित नातो सब ठाने । हरि मति पूंछि लेहिं नहिं माने॥
जननी जनक नेमकरि देहीं । तेतो जगत मान सब लेहीं १०
तैं अधिकार अधिक कह कीन्हा। कितो अयश हरिहित शिरलीन्हा॥
तव पितु यश परकट जगमाहीं। मणि चोरी दीन्हीं हरि पाहीं ११
मनमोहन शशि परकट कीन्हों। तब खिसियाय लाय तुहिं दीन्हों॥
समयपरे नर जान्यो जाई । तोपर किती परी कठिनाई १२
कूपमध्य दादुर कह जानै । सिन्धु अपारसार नहिं मानै ॥
याकी गति रस रुक्मिणि बूझै। प्रेमपन्थ तोकहँ नहिं सूझै १३
आपुन समुझत नेमरु प्रेमू । सिखवत परहि गिरा बुधि जेमू ॥
प्रेम प्रताप विदित नहिं तोही । प्रेम विना हरिभक्ति न होही १४
भक्तन की महिमाको बोलै । जिन सँग हरि आयुध धरिडोलै॥
दुरबासा हरिभक्तहि त्रास्यो । प्रभु सोउ मुनिके गर्वहि नास्यो १५
भक्तऽपमान श्याम नहिं करहीं । भृगुकी लात हृदय निज धरहीं॥
भक्त वश्य सों चक्र चलायो । दुरबासहि नृप शरण दिखायो १६

दो० हरि हरिजन अन्तर नहीं, श्रीमुख कह्यो सुनाय ॥
द्वैतभाव जे जानहीं, ते नहिं हरिहि सुहाय १
सानुकूल भक्तहि सदा, कबहुँ न आवत कोह ॥
यद्यपि गुणअवगुण करहिं, तद्यपि राखत छोह २
वेद वदत सबजग विदित, हरि हरिजन अनुसार ॥
भक्तवश्य प्रभु भक्तहित, अकरन करन मुरार ३
भक्ति न आवै प्रेम बिनु, भक्ति विना नहिं भक्त ॥
नवधा भक्ति कहावई, प्रेमहिं के आसक्त ४
कोटि वर्षलौं तप तपिय, विविध भांति करि नेम ॥
हरि हिरदै आवैं नहीं, जौ लागि प्रकट न प्रेम ५
क्षणभरहूं जो प्रेमकरि, चित पावै विश्राम ॥
बिनु प्रयास भवनिधि तरइ, लहै श्याम पद ठाम ६
कहा भयो हरि द्वारका, बसे छांड़ि व्रजवास ॥
तद्यपि मनमें है रहे, व्रज जनहीं के पास ७
किये विपुल तुमते बिछुरि, सुर नर मुनिके काज ॥
सदा निरन्तर बसत व्रज, प्रेम विवश व्रजराज ८

प्रकट प्रेम रविजा उर राजै । तहँ खद्योत नेम कत छाजै ॥
जौ लगि प्रेम प्रकट नहिं अहई । तौ लगि नेम जगत को गहई १
प्रेम रत्न जबहीं नर पावै । नेम काँच करते छिटकावै ॥
प्रेम रहित नर सोहहिं कैसे । सोम विहीन शर्वरी जैसे २
प्रेम रहित नर सोहैं कैसे । विना सरलता साधू जैसे ॥

प्रेम रहित नर सोहहिं कैसे । बाग विचित्र वृक्ष बिनु जैसे ३
प्रेम विना नर पशू समाना । प्रेम लह्यो तिन्ह सब कछु जाना॥
प्रेम कथा कछु जात न गायो । शबरी को चाख्यो फल खायो ४
प्रेमविवश श्रीरघुकुलचन्दा । दनुजवृन्द कर कियो निकन्दा ॥
शक्ति प्रहार हृदय निज लीन्हा । पाछे राखि विभीषण दीन्हा ५
भक्तहि देखि सकहिं नहिं भीरा । प्रेम विवश आपुन सहपीरा ॥
ऐसे प्रेम विवश गोविन्दा । बँधे जाय धीवर के फन्दा ६
प्रेम बिवश रुक्मिणिहिं बिवाहीं । अजहुँ शिरोमणि नारिन माहीं॥
प्रेम विवश द्विज तंदुल खायो । चरणोदक लै शीश चढायो ७
विपुल विभूति दई जग जाने । तबहूं श्याम रहे सकुचाने ॥
प्रेम विवश प्रभु दूत कहाये । पाण्डव हेत बसीठी धाये ८
दुर्योधनकी मेवा त्याग्यो । शाक बिदुर घर नीको लाग्यो॥
भारत समर कियो जब पारथि । प्रेम विवश आपुन भये सारथि९
कीन्हें विपुल प्रेम वश लीला । कहँलौं कहियेचरितसुशीला ॥
प्रेम विवश प्रभु काह न कीना । व्रजमें अति चरित्र रँग भीना१०
शेश महेश सुरेश गणेशा । अंत न पायो किनहूं लेशा ॥
प्रेम विवश यशुदा के धामा । ऊखल बाँध बंधे घनश्यामा११
गिरि गोवर्द्धन करपर धार्यो । प्रेम विवशवन गैयन चार्यो ॥
व्रजवासिनकी जूठन खायो । जिहि अवलोकि विरञ्चि भुलायो १२
कियो पान दावानल पलमें । नन्द हेत धाये हरि जल में ॥
प्रेम विवश भये गोपीनाथा । इन पांयन पर परसे माथा १३

ऐसे श्याम प्रेम रँग राचे । षोड़श सहसरूप धरिनाचे ॥
जो सुख इन्द्रादिक नहिंदेख्यो । शारद नारद कबहुँ न लेख्यो १४
जो अज शंकरादि नित ध्यायो । सो व्रजगोप सुगम करि पायो ॥
तेरे अग्र प्रेमका लेखा । लोचनहीन मुकुर मनु देखा १५
सत्य शूर लज्जा छविगाता । दानरु दया शील हित बाता ॥
जिहिविधि देइ दई सो होई । कोटि करहु सीखै नहिं कोई १६

दो० लाख बातकी बात यह, कत करिये बकवाद ॥
जिहि ध्यापै सो जानही, प्रेम सुरसको स्वाद १
जहाँ बसत हरिभक्ति उर, तहां रहत हौं सङ्ग ॥
बहुरि गिरा करि रटतजब, दम्पति परत न भङ्ग २
जनि गर्वित मनमें रहहु, मम सम प्रेम न तोहि ॥
पूछत किन यदुराय सों, झूठ सांचको होहि ३
सुनि सुनि श्यामाके वचन, अति अनन्द यदुनन्द ॥
तब सतिभामा प्रति कह्यो, बिहँसि श्याम सुखकन्द ४
राधा कहत सुसत्य मोहिं, इहि सम प्रिय नहिं कोइ ॥
कितनींहू कोऊ करहु, याकी सर नहिं होइ ५
व्रजवासिन हित को कहइ, प्रेम पुञ्ज की खान ॥
प्रकटहि प्रेम अखण्ड उर, करहि जो इन गुण गान ६
प्रेम लह्यो तिन सब लह्यो, कछु न एक बिन प्रेम ॥
लोन विना भोजन विरस, प्रेम हीन नर तेम ७
जिन पायो तिन प्रेमकरि, इन जु कही सो सार ॥

भई खिस्यानी सुनत मन, रुक्मिणि विनु सब नार ८
तब प्यारी प्रति कह्यो कन्हाई । तू कत सर में रही समाई ॥
बाहिर निकसि आव मो पाहीं । शोच रही कत निज मनमाहीं १
कहत न कत उर में जो आई । भावी है सो मेटि न जाई ॥
जब मोहन यों वचन सुनायो । तब राधा मन धीरज आयो २
सुनहु श्यामघन अन्तरयामी । करुणानिधि प्रभु त्रिभुवन स्वामी ॥
सदाकृपाल अभयके दानी । भक्त सुखद यश निगम बखानी ३
गुणसागर नागर नँदनन्दन । आनँदकन्द भक्त उर चन्दन ॥
सगुण रूप सुन्दर दिव्येशा । इच्छा पूरण परम रमेशा ४
रसिक शिरोमणि रासविहारी । बांके वंशीधर गिरिधारी ॥
व्रजवल्लभ गोपीजन प्यारे । अहो यशोदा नन्द दुलारे ५
जो यह वचन मानिकै लीजै । मांग्यो दान हमैं प्रभु दीजै ॥
तौ सरवर ते बाहिर आऊं । नातरु याही ठाम समाऊं ६
सुनि सप्रेम प्यारीके बैना । भरि लीन्हें दोउ राजिवनैना ॥
गदगद कहत कहत कत नाहीं । जो मांगहि देहौं इहि ठाहीं ७
भक्तहि कछु अदेय नहिं मेरे । भाषत चरण शपथकरि तेरे ॥
सदा भक्तको भायो ठानों । भक्तनहीं के हाथ बिकानों ८
बरु मैं आपु सहौं कठिनाई । भक्तविरह मोहिं सह्यो न जाई ॥
तोसे भक्त भाग ते पाऊं । निशि वासर जिनके गुणगाऊं ९
भक्तप्रेमवश विवश रहौं नित। सुमनवासहित अलि जिमिजिततित॥
सृष्टिमाहिं भक्तहि मोहिं प्यारा। भक्तनही के हित अवतारा १०

तब राधा बोलीं मनमोहन । वृन्दावन डोलो तुम गोहन ॥
वे व्रज वेष बांसुरी लीन्हें । नटवर साज मनोहर कीन्हे ११
नित्य सांवरी मूरति पेखौं । तौ मैं बहुरि जाय व्रज देखौं ॥
नातरु सांची कहत विहारी । यहतन तुम पर है बलिहारी १२
सुनत वचन प्रभु करुणाऐना । एवमस्तु बोले सुखदैना ॥
यह सुनिकै प्यारी सचुपाई । निकसि तालते तट पर आई १३
तात्क्षण लसी राधिका ऐसे । प्रकटी रमा क्षीरनिधि जैसे ॥
तब रुक्मिणिवरवसन सवांरी। हित करि चुनि पहिराई सारी १४
मिलीं परस्पर उभय सुहाई । प्रीति रीति कछु जात न गाई ॥
कौतुकनिधि हरि एक अनंता । द्वै तन धारि लये भगवंता १५
गये द्वारका नृप तन धारी । धरणी हित प्रभु पातकहारी॥
राधहि ताते संग न लीन्हा।अचल वेषहरि व्रजहित कीन्हा१६
दो० निराकार निर्गुण यदपि, तदपि सगुण धरिदेह ॥
करत फिरत नाना चरित, केवल भक्त सनेह १
गिरा ज्ञानहूं अगम गति, अन्त न लह गौरीश ॥
नित नूतन गुण गावहीं, रसना सहस अहीश २
निजमुखते भाष्यो अहो, भक्त अतिहि प्रियमोहिं ॥
भक्त वचन उलँघों नहीं, अविहित विहित जो होहिं ३
भक्तन की महिमा अमित, पार न पावै कोय ॥
जहां भक्तजन पगधरैं, असदृश तीरथ सोय ४
भक्त सङ्ग छांड़ौं नहीं, सदा रहत तिन पास ॥

जहां न आदर भक्त को, तहां न मेरो वास ५
फिरत धाम वैकुंठ तजि, भक्त जनन के काज ॥
जोइ जोइ जनमन भावहीं, धारत सोइ तन साज ६
ज्यों विहंग वश पींजरे, रहत धनी आधीन ॥
त्योंहीं भक्ताधीन प्रभु, निज जन हित तन लीन७
ऐसे प्रभुहि न जे भजहिं, ते नित भव भ्रम अन्ध ॥
भक्तिकिये निज प्रभु सदृश, करत ताहि निरबन्ध ८
इच्छामात्र सकल जग करता। पालनहार सकल संहरता ॥
कम्पत काल जासु भयभारी। सोई भक्ताधीन मुरारी १
भक्तन हित नाना तन धारे। शुक सनकादिक गावत हारे ॥
अति अलक्ष्य गति जान न जाई। वेदहु जाको भेद न पाई २
पूरणब्रह्म सच्चिदानन्दा। परमानन्द दरण दुखद्वन्दा ॥
आदिपुरुष सचराचर रूपा। अज अद्वैत अखण्ड अनूपा ३
अभय असङ्ग अनीह अनामा। अमित अरूप ज्योतिमय धामा॥
परम उदार विश्वके मण्डन। दीनदयालु भक्तभय खण्डन ४
सन्तत संतहि रहत सरल से। खल वन गहनहिं दहन अनल से॥
चिन्तितदायक सुरतरुवर से। तम भ्रम हरण दिवाकरकर से ५
निधन जननको कोटि धनदसे। मुनिमन शिखिहि सघन नीरदसे॥
पतितहि पावन सुरसरितट से। भववोहित तारण केवट से ६
शत्रुनिकरको महा सुभटसे। गोपीजन को अति लम्पट से ॥
निकट निहारत निपट निडरसे। दूरि विलोकत अतिहि विकटसे७

सन्तत हरि जैसे को तैसे। ठानत कबहूँ नाहिं अनैसे॥
हरिकी गति हरिही बनिआवै।कहत सुनत कहि समुझि न आवै८
धरि नटरूप राधिका साथा। वृन्दावन आये व्रजनाथा॥
वय किशोर नव युगल विहारा। रहत सदा व्रज नन्दकुमारा ६
जिनहिं प्रेमते नयन निहारे। तनमन धन छवि पर लखिवारे॥
मोरमुकुट गुञ्जा बनमाला। कटि कछनी पटपीत रसाला १०
नील कमलदल मंजुल वरणा। नयन चपल अनियारे अरुणा॥
मकराकृत कुण्डल श्रुति सोहै। छवि अवलोकि मैन मनमोहै ११
अङ्ग अङ्ग आभूषण सुन्दर। शोभित जनु शोभा के मन्दर॥
वे वनधातुन चित्रित कीन्हें। कनक लकुटिया कांखहिं लीन्हें १२
मधुर मंद मृदु मुरलि बजावत। मुख ढिग लसत वेधकर छावत॥
वाम अङ्ग सोहत श्रीप्यारी। छवि की सीम अमित उजियारी १३
मणिमय भूषण भूषित चारू। कीन्हे शुभ षोड़श शृङ्गारू॥
युगलमनोहर छविकी शोभा। भ्राजत कोटि सूर शशि ओभा १४
वृन्दावन चैतन्य स्वरूपा। कृष्ण विहार हेत यदुरूपा॥
चिंतामणिमय महा सुदेशा। परसत रहत न अघ लवलेशा १५
वेई कदम कुञ्ज की छाया। जिहि लखि मिटत मोह मद माया॥
सुमन सुगंध झरत शाखाते। गुञ्जत भ्रमर भ्रमत मदमाते १६

दो० परमरम्य वे घन सघन, कुञ्ज पुञ्ज छविधाम॥
वेई तृण तरु हरित अरु, लता सुलालित ललाम १
वेई बरही नटत वर, कूकत कोकिल कीर॥

वे मराल कलरव करत, वे यमुनाके तीर २
वे खग मृग बोलत विविध, बहत त्रिविध सुसमीर ॥
प्रफुलित वे कैरव कमल, वे तरङ्ग वे नीर ३
वेई विपिन बसंत नित, वेई गोपी वृन्द ॥
वे रजनी रस रास वर, करत नवल व्रजचन्द ४
वरषत गगन विदूष जन, सुगम सुगन्ध अपार ॥
बांछत वृन्दा विपिन रज, वन्दत वारंवार ५
वे राधा माधव सदा, व्रजमें करत विहार ॥
धन्य सुथल परशत चरण, रतन जात बलिहार ६
प्रेम रतन गावहिं सुनहिं, जे सप्रेम नर नार ॥
कृष्ण प्रेम ते पावहीं, सकल सुखनको सार ७
हरि सम जग कछु वस्तु नहिं, प्रेमपंथ सम पंथ ॥
सतगुरु सम सज्जन नहीं, गीतासम नहिं ग्रंथ ८
सो० जो जन होहु सुजान, लीजो चूक सुधारि धरि ॥
बालक अति अज्ञान, हौं अजान जानत न कछु १
अतिजड़ बड़िमातिमन्द, नहिं कवि बुधि नहिं चतुर कछु॥
मोको गमहुँ न छन्द, यह गायों गुरु कृपाते २
ठारहसै चालीस, चतुर वर्ष जब विदित भय ॥
विक्रम नृप अवनीस, भये भयो यह ग्रंथ तब ३
माह माह के माह, अति शुभ दिन सित पंचमी॥
गायो परम उछाह, मंगल मंगलवार वर ४

कह्यों ग्रंथ अनुमान, त्रय शत अरसठ चौपई ॥
तिहि अर्धरु अठ जान, दोहा सोरह सोरठा ५
काशी नाम सुठाम, धाम सदाशिव को सुखद ॥
तीरथ परम ललाम, सुभग मुक्तिवरदान छम ६
ता पावन पुरमाहिं, भयो जन्म या ग्रंथ को ॥
महिमा वरणि न जाहिं, सगुण रूप यशरस भस्यो ७
कृष्ण नाम सुखमूल, कलिमल दुखभंजन भजत॥
पावहिं भवनिधि कूल, जाके मन यह रस रमहि ८
कुरुक्षेत्र शुभ थान, व्रजवासी हरिको मिलन ॥
लीला रसकी खान, प्रेमरत्न गायो रतन ६

इति प्रेमरत्न भाषासमाप्तिमगात् ॥

संगीत-राग-भजन आदि संबंधी पुस्तकें—

श्रीकृष्ण-गीतावली	।)
काशी भजनावली	−)॥
ख़्यालात मातादीन	≡)
गोपीचंद-भरथरी	−)॥
चौताल रसिक-मनहरण (पाँचो भाग)	।)॥
चुरिहारिन लीला	)॥।
अपूर्व भजन-लता	−)॥
आनंद-लहरी	)॥।
अनुराग-रस	)॥।
अर्ज-पत्रिका	=)
अष्टयाम	।)
काम-कटारी	)॥।
छंद-प्रकाश	।)
भजन-रामायण	−)॥
भजन-प्रभाती	−)॥।
भजन-रत्नाकर	−)॥
भजन-माला	−)।
आनंद-सागर (१-२ भाग)	॥≡)
रासलीला (बड़ी)	१)
भक्त-रसनामृत	−)
जानकी-चरण-चामर	=)॥
धर्म-प्रेम-तरंग	।)
नवीन ग़ज़ल-संग्रह	=)॥
नवरत्नभाष्य वृंदावन-विलास	≡)
धर्मोपदेश	=)
प्रावृट-प्रिया	−)।
प्रेमावली	−)।
प्रेम-प्रकाश	=)॥
प्रेम-रसामृत	−)
सती-विलास	=)
मन-मोहिनी	।=)॥
भजन-विनय-पचीसी	−)।
भजन-संग्रह	≡)

नोट—अन्यान्य पुस्तकों के लिये −) का टिकट भेजकर बड़ा सूचीपत्र मुफ़्त मँगालीजिए।

मिलने का पता—

मैनेजर, नवलकिशोर-प्रेस (बुकडिपो),

हज़रतगंज, लखनऊ.